ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 14 अंक: 164 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका जनवरी 2022

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

सद्गुरुदेव के प्रति समर्पण

''मंत्र एक ही गुरु का चलेगा, आपके professional (व्यावसायिक) गुरु हैं तो वो उसके साथ नहीं चलेगा और ध्यान मेरा (सद्गुरुदेव सियाग) करना पड़ेगा।''

''जिसे आप देवी, राधा, सीता, पार्वती के नाम से पूजते हो, हमारे योगियों ने उसे कुण्डलिनी कह दिया। वो Sacrum (कमर के पीछे की तिकोनी हड्डी या रीढ़ की हड्डी का अंतिम सिरा) में साढे तीन आंटे (फेरे) लगा कर, अपनी दुम (पूँछ) को मुँह में दबाये हुए dormant position (सुषुप्त-अवस्था) में रहती है। सुषुप्ति में रहती है। अगर proper (समर्थ,सही) गुरु है तो ही जागती है। हठयोग से अगर उसे छेड़छाड़ करोगे तो आपको पागल भी कर सकती है, मृत्यु भी हो सकती है। इस प्रकार आपको केवल नाम जपना है और ध्यान करना है और मुझे यहाँ (आज्ञाचक्र) देखना है। मंत्र एक ही गुरु का चलेगा, यदि आपके professional (व्यावसायिक) गुरु हैं तो वो उसके साथ नहीं चलेगा और ध्यान मेरा (सद्गुरुदेव सियाग) करना पड़ेगा, उसके बाद आपकी छुट्टी। अगर मुझमें गुँजाईश है तो काम अभी शुरू हो जायेगा, 20 साल नहीं लगेंगे और मैं आपको कुछ नहीं दूँगा, एक बात ध्यान से सुन लो।

मैं आपको अपने आपसे, खुद से Introduction (परिचय) कराऊँगा- आप क्या हो ? आप शरीर नहीं हो, यह आत्मा है, आत्मा अजर-अमर है। मैं आपको अपने आप से साक्षात्कार कराऊंगा, कुछ दूँगा नहीं। मैं तो कहता हूँ, जो मुझ में परिवर्तन आया है, वो आप सब में आ सकता है। subject to, आप surrender (समर्पण) करो, गुरु के प्रति सद्भाव से नमस्कार करो।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग 30 जुलाई 2009

www.the-comforter.org

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष: 14 अंक: 164 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका जनवरी 2022

❖

संस्थापक एवं संरक्षक:

पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖

सम्पादक:

रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

अनुक्रम

सद्गुरुदेव के प्रति समर्पण 2
भगवान् की माया का खेल बड़ा विचित्र है। 4
आपके भीतर जो परिवर्तन आएगा, वो मंत्र जप और 9
गुरु का पद ईश्वर से भी महान् 10
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा, सादर समर्पित है 11
मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सनातन धर्म का महत्त्व 12
खेल-तमाशा बहुत हुआ, अब जाग मुसाफिर, जाग ! 13
स्वर्णमयी भारत के बढ़ते कदम 16
बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) बरसी.....20
सिद्धयोग ध्यान शिविरों की झलकियाँ 22
साधना विषयक बातें 31
कहानी - माँगने का विवेक 37
दिव्य जन्म और दिव्य कर्म 39
सिद्ध-योगियों की महिमा 44
रूपान्तरण 51
'दासोऽहम' का 'दा' नष्ट होना ही जीवन का उद्देश्य 57
योग के आधार 67
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 70
ध्यान की विधि 73

भगवान् की माया का खेल बड़ा विचित्र है।

मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के माध्यम से, प्रभु जो कुछ करवाने जा रहे हैं, वह भारी अचम्भे की बात है। जो कुछ मेरे माध्यम से होने जा रहा है, उसके बारे में संसार के आम व्यक्ति के सामने अगर मैं बताने लगूँ तो मैं निश्चित तौर पर पूर्ण रूप से पागल घोषित कर दिया जाऊँगा। ''संसार में एक रेगिस्तानी भाग पर एक गरीब की कच्ची झोंपड़ी में पैदा प्राणी संसार में जो कुछ करने जा रहा है, वह ईश्वर का भारी चमत्कार है।''

सन् 1984 में यूहन्ना का 15 : 26,27 तथा 16 : 7 से 15 का अंश पढ़ने पर मुझे बड़ी जिज्ञासा हुई कि यह मेरे प्रश्न का कैसा उत्तर मिला। पता लगाने पर मुझे मालूम हुआ कि वह अंश तो ईसाइयों की पवित्र धार्मिक पुस्तक 'बाइबिल' का अंश था।

अनायास मुझे कुछ दिनों बाद बाइबिल का एक भाग The New Testament मिल गया। वह पुस्तक एक हिन्दी अनुवाद थी। मूल भाषा का हिन्दी अनुवाद बहुत गलत अर्थ समझा रहा था। इस पर मैंने वी. के. शर्मा नामक रेलवे अस्पताल, बीकानेर की मैट्रन से मूलभाषा की बाइबिल ली। उसके विशेष दो अंश मैंने मेरी डायरी में लिखे, जो कि मेरे से सम्बन्धित हैं, जिसे परम सत्ता ने मुझे दिखाया और उनकी प्रत्यक्षानुभूति करवाई।

St. John 16 : 12 से 15 की सभी बाते जब सच्ची प्रमाणित होने लगी तो मुझे भारी आश्चर्य होने लगा। एक दिन मैंने सोचा इस आनन्द के बारे में बाइबिल में क्या कहा है, तो मुझे प्रेरणा मिली कि St. John 15 : 11 तथा भजन संहिता 23 : 5 पढ़ूँ। जब मैंने उस अंश को पढ़ा तो भारी अचम्भा हुआ। जो कुछ लिखा था, ठीक वैसा ही आनन्द मेरे द्वारा मेरे शिष्यों में फैल रहा

www.the-comforter.org

था। इस पर मुझे विचार आया कि मुझे तो आराधना विशेष के कारण ऐसा हो रहा है, परन्तु मुझसे जुड़ने वाले लोगों को ऐसा क्यों हो रहा है, इस पर मुझे

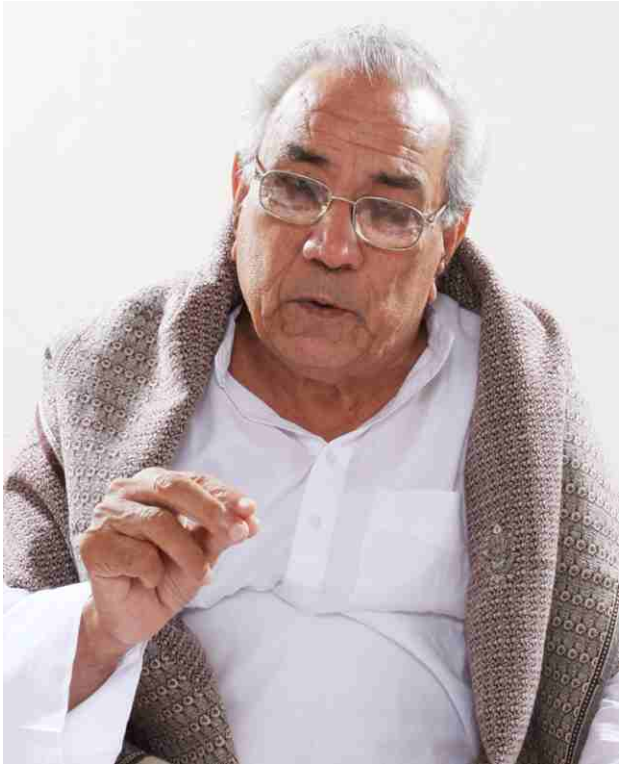

प्रेरितों के काम का 1: 5 का अंश दिखाया गया। उसे पढ़ कर, मैं कुछ भी नहीं समझा। विचार आया कि मुझसे सम्बन्धित सभी लोगों को प्रत्यक्षानुभूतियाँ किस कारण से हो रही हैं? इस पर मुझे St. John 3 : 3 से 8 तक का अंश पढ़ने का आदेश मिला। उसे पढ़ने से, मैं समझा कि यह हिन्दू दर्शन के द्विज बनने के सिद्धान्त की बात है।

मेरी आराधना का तरीका तो हिन्दू दर्शन के उस सिद्धान्त पर आधारित है कि सारा ब्रह्माण्ड अन्दर है। अतः उस परमसत्ता से सम्पर्क अन्तर्मुखी हुए बिना असम्भव है। इस पर मुझे St. John 2 : 19 से 21 तथा 2 Corinthians का 6: 16 भाग देखने की प्रेरणा मिली।

मुझे उपर्युक्त तथ्यों ने बहुत प्रभावित किया। विचार आया संसार के लोगों ने स्वार्थवश अलग-अलग धर्म और सम्प्रदाय बनाकर उनके ठेकेदार बने बैठे हैं। ईश्वर ने जितने भी संत पैदा किये, वे संसार के सभी प्राणियों के लिए कार्य कर गये हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी, बौद्ध, जैन आदि सभी मानवीय बुद्धि का चमत्कार हैं।

एक दिन विचार आया कि इस

समय तो बहुत कम लोगों से सम्पर्क है परन्तु जिस समय संसार के विभिन्न लोगों से सम्पर्क होगा तो फिर कैसी स्थिति होगी ? इस पर प्रेरितों के काम 2 : 14 से 2:18 और 2:33 को देखने की प्रेरणा मिली।

उपर्युक्त तथ्यों को देख कर मुझे बड़ा अचम्भा हो रहा है। दो हजार वर्ष पहले जो तथ्य एक महान् आत्मा ने बताए, वे सभी मेरे जैसे साधारण व्यक्ति से प्रमाणित होते देख बड़ा अचम्भा हो रहा है। बाइबिल और गीता में लिखी सभी बातें, मैं भौतिक जगत् में प्रमाणित करने की स्थिति में हूँ। अति शीघ्र सभी तथ्य संसार भर में प्रकट होने वाले हैं।

प्रभु की लीला विचित्र है।

ईसाइयों की प्रथम St. John द्वारा लिखी "जीवन का मार्ग" सन् 1984 में अनायास पढ़ने को मिली। परन्तु बाइबिल में वर्णित बातों की प्रत्यक्षानुभूतियाँ तथा साक्षात्कार बहुत पहले से प्रारम्भ हो गये थे। The New Testament तो सन् 1986 के अन्तिम दिनों में मिला, इसके बाद सभी तथ्यों का, जो बाइबिल में दो हजार साल पहले लिख दिया गया था, कार्यरूप में मेरे माध्यम से परिणित होते हुए, परमसत्ता द्वारा दिखाया गया। बड़ी विचित्र बात है। पश्चिमी जगत् को स्वीकार करने में भारी मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। परन्तु सोने को जंग नहीं लगता। आखिर सच्चाई को स्वीकार करना ही पड़ेगा।

आइन्सटीन ने जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया है कि अनादिकाल से बोले गये शब्द, ब्रह्माण्ड में आज भी मौजूद हैं। उसे वैज्ञानिक उपकरण से सुना जा सकता है। मैं कहता हूँ, शब्द ही नहीं सभी घटनाओं के दृश्य भी चाहे वे भूतकाल की हैं या भविष्य में घटने वाली हैं, देखे सुने जा सकते हैं। मैं इसे प्रमाणित करने की स्थिति में

www.the-comforter.org

हूँ। यीशु-मूसा तो कल हुए थे।

मैंने एक बार एक दृश्य देखा। मैं किसी सागर को पार करके उसके किनारे पहुँचा। उस सागर में बहुत ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही थी। परन्तु उससे बाहर निकलने के लिए जिन चट्टानों पर चढ़ना था, वह इतनी ऊँची थी कि मेरे हाथ की पकड़ से बाहर थी। अचानक क्या देखता हूँ कि एक बहुत ही बलिष्ट व्यक्ति ठीक मेरे ऊपर वाली चट्टान पर आकर खड़ा हो गया और झुक कर अपना दाहिना हाथ मेरी तरफ नीचे की ओर बढ़ा दिया। मैंने उसका दाहिना हाथ मेरे दाहिने हाथ से पकड़ लिया और उसके सहारे झूलने लगा। मैंने सोचा वह मुझे खींच कर निकाल लेगा, परन्तु उसने एक इंच भी मुझे ऊपर नहीं खींचा, परन्तु मेरा हाथ मजबूती से पकड़े रहा, छोड़ा नहीं। मैं बहुत परेशान हुआ सोचा क्या किया जाय। फिर मैंने मेरे दाहिने हाथ की ताकत के सहारे मेरे शरीर को संभाला और मेरे बांये पैर को ऊपर किनारे की तरफ बढ़ाया। संयोग से मेरे बांए पैर का अंगुठा ऊपर की चट्टान के ऊपर टिक गया और उस पर शरीर का वजन संभालते हुए दाहिने हाथ की शक्ति से शरीर को ऊपर ढकेलते हुए बाहर आ गया।

> ''मुझे भारी अचम्भा हो रहा है। एक बार मैंने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि मुझ जैसे साधारण व्यक्ति से ये असम्भव कार्य क्यों करवा रहे हैं ? कृपया किसी योग्य और उपयुक्त व्यक्ति को यह कार्य सौंपे। जिसकी संसार में प्रतिष्ठा और सामाजिक मान्यता हो, इस पर मुझे उत्तर मिला कि यह सब तुझे ही करना है, और किसी को नहीं सौंपा जा सकता।''

पहले मुझे बिलकुल भी उम्मीद नहीं थी कि मुझे बाहर निकलने में

सफलता मिल जायेगी क्योंकि ऊपर खड़ा अतिबलिष्ट व्यक्ति मुझे बाहर बिलकुल नहीं खींच रहा था।

अतः जब मैं बाहर निकल कर उसके दाहिनी तरफ खड़ा हो गया तो मुझे भारी प्रसन्नता हुई। इसके तत्काल बाद वह दृश्य खत्म हो गया। और सभी बातें बाइबिल से मिल कर वैसे ही सही प्रमाणित हो रही हैं, जैसा उसमें लिखा है।एक दिन ऊपर के दृश्य की बात याद आ गई और सोचा उक्त दृश्य का अर्थ आज तक समझ में नहीं आया।इस पर मुझे प्रेरितों के काम के 2 : 33 को देखने की प्रेरणा मिली। उसे पढ़कर मुझे भारी अचम्भा हुआ। सोचा परमात्मा किस प्रकार जीवन में होने वाली घटनाओं को निश्चित समय पर अपने द्वारा निश्चित किये हुए तरीके से समझा रहा हैं।

मानवीय बुद्धि जिस बात की कभी कल्पना भी नहीं कर सकती, ईश्वर क्षण भर में उसे सम्भव करके कार्य रूप में परिणित कर देता है।

मुझे भारी अचम्भा हो रहा है।एक बार मैंने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि मुझ जैसे साधारण व्यक्ति से ये असम्भव कार्य क्यों करवा रहे हैं? कृपया किसी योग्य और उपयुक्त व्यक्ति को यह कार्य सौंपे जिसकी संसार में प्रतिष्ठा और सामाजिक मान्यता हो, इस पर मुझे उत्तर मिला कि यह सब तुझे ही करना है, और किसी को नहीं सौंपा जा सकता

अतः अदृश्य सत्ता के इशारे पर संसार में निकल पड़ा हूँ। मुझे न सफलता से खुशी होती है न असफलता से दुःख क्योंकि मैं तो उस सत्ता का दास हूँ, केवल मजदूरी का अधिकारी हूँ, घाटे-नफे से मुझे कोई वास्ता नहीं।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
08-09-1988

आपके भीतर जो परिवर्तन आएगा, वो मंत्र जप और ध्यान से आएगा।

''मैं आपको कुछ नहीं दूँगा, एक बात ध्यान से सुन लो। मैं आपको अपने आपसे, खुद से introduction (परिचय) कराऊँगा- आप क्या हो? आप शरीर नहीं हो, यह आत्मा है, आत्मा अजर-अमर है। मैं आपको अपने आप से साक्षात्कार करवा दूँगा, कुछ दूँगा नहीं। मैं तो कहता हूँ, जो मुझ में परिवर्तन आया है, वो आप सब में आ सकता है। subject to, आप surrender (समर्पण) करो, गुरु के प्रति सद्भाव से नमस्कार करो।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

(आजकल बहुत सारे साधक नये-पुराने साधकों के चक्र में वृथा भटक रहे हैं। कुछ साधक गुरुदेव के बताए पथ पर चलते नहीं है। सघन मंत्र जप और नियमित ध्यान नहीं करने से परिवर्तन नहीं आता है। गुरुदेव ने साफ कह रखा है- बाहर से कोई किसी को कुछ नहीं दे सकता है। साधक में जो परिवर्तन आएगा वो तो गुरुदेव द्वारा बताए संजीवनी मंत्र के सघन जप और नियमित ध्यान से आएगा। इसलिए साधक को किसी भी साधक से कुछ भी उम्मीद रखने की आवश्यकता नहीं है। जीवन में सबसे बड़ा अनर्थ है यदि कोई साधक गुरुदेव के बताए पथ से किसी को भ्रमित करने का प्रयास करता है।

इसलिए जो भी साधक आराधना पथ पर हैं, उनको ज्यादा से ज्यादा गुरुदेव के प्रति समर्पण भाव से आराधना करनी चाहिए। गुरुदेव के सिवाय कोई कुछ नहीं दे सकता है।और यदि किसी दूसरे के चक्कर में पड़ गये तो ये जीवन वृथा बीत जाएगा। अतः सभी साधकों से निवेदन है कि गुरुदेव के बताए पथ पर चलते हुए नियमित आराधना करते रहें।)

गुरु का पद ईश्वर से भी महान्

वैदिक धर्म अर्थात् हिन्दू-धर्म में 'गुरु का पद', ईश्वर से भी महान् माना गया है। इस संबंध में गुरु गीता में कहा है:-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुरेव साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

मैं नाथमत का अनुयाई हूँ। मेरे मुक्तिदाता परमश्रद्धेय सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी आईपंथी नाथ थे। कलियुग में नाथ मत के आदिगुरु योगेन्द्र श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी महाराज माने गए हैं। मैं उन्हीं के आदेश से पश्चिमी जगत् में ज्ञानक्रान्ति का नेतृत्व करूँगा।

भारत, इस समय घोर तामसिकता में डूबा हुआ है। भारत के उत्थान के लिए सर्व प्रथम ''रजोगुण'' के विकास की आवश्यकता है। व्यावहारिक भाषा में भारतीयों की प्रथम आवश्यकता 'रोटी' की है, 'राम' का स्थान द्वितीय स्थान पर है।

पश्चिमी जगत्, भौतिक सुविधाएँ भोगते-भोगते बहुत ही दुःखी हो चुका है। आज जितना अशांत 'पश्चिमी जगत्' है, उतना अशांत संसार का कोई देश नहीं। आज उन्हें मात्र शांति की ही भूख बाकी बची है। और शांति केवल राम अर्थात् ईश्वर तत्त्व ही दे सकता है क्योंकि यह काम केवल वैदिक-धर्म अर्थात् हिन्दू-धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों के अनुसार जीवन जीने से ही संभव है।

अतः मुझे कलियुग के आदिगुरु से आदेश मिला है कि मेरा कार्य विशेष रूप से पश्चिमी जगत् को चेतन करने का है। उसी आदेश के कारण अब मैं प्राथमिक रूप से पश्चिमी जगत् में कार्य करना चाहता हूँ।

21वीं सदी, मानव जाति के पूर्ण विकास का समय है, और पूर्ण विकास की क्रियात्मक विधि केवल भारत ही जानता है। अतः अब भारत का कार्य प्रारम्भ होता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
19/09/1997, जोधपुर

तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा, सादर समर्पित है

गुरु ? जो गोविन्द से मिलाए

तत् त्वम् असि

"मैं नाथमत का अनुयाई हूँ। मेरे मुक्तिदाता परमश्रद्धेय सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी आईपंथी नाथ थे। कलियुग में नाथ मत के आदिगुरु योगेन्द्र श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी महाराज माने गए हैं। मैं उन्हीं के आदेश से पश्चिमी जगत् में ज्ञानक्रान्ति का नेतृत्व करूँगा।"

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सनातन धर्म का महत्त्व

आजादी प्राप्त करने के बाद श्री अरविन्द ने कहा था 'हम केवल सरकार का रूप बदलने के लिए तैयारी नहीं कर रहे हैं, हम एक राष्ट्र को गढ़ना चाहते हैं। राजनीति तो इसका एक छोटा सा भाग है। हम केवल राजनीति, सामाजिक संगठन, धार्मिक वाद-विवाद, दर्शन साहित्य या विज्ञान तक ही अपने आपको सीमित नहीं रखना चाहते। हमारे लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है 'धर्म' और ये सब चीजें और इसके अतिरिक्त और बहुत कुछ हमारे धर्म की परिभाषा में आते हैं।

जीवन के कुछ महान नियम हैं। मानव-विकास का एक सिद्धांत है और अध्यात्म-विद्या का एक भंडार है। ये सब तत्त्व हमारे 'सनातन धर्म' के अन्दर आ जाते हैं। इसकी रक्षा करना, इसका प्रसार करना और इसका मूर्तिमन्त उदाहरण बनना भारत का कर्तव्य है। विदेशी प्रभाव के कारण भारत अपने धर्म को खो बैठा है। सनातन धर्म- सिद्धांतों का, धार्मिक परिपाटियों का एक समूह नहीं है।

जब तक उसे जीवन में न उतारा जाय, हमारे दैनिक जीवन की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीज के अन्दर-चाहे वह राजनीति हो या वाणिज्य, साहित्य हो या विज्ञान, वैयक्तिक आचरण हो या राष्ट्रीय कूटनीति-मूर्तरूप से न लाया जाय, तब तक उसकी सफलता नहीं होगी। भारत, जीवन के सामने 'योग' का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसक रक्षण करेगा।

योग के द्वारा सच्ची-स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करने की बात हमें तब तक समझ में नहीं आ सकती जब तक हम क्रियात्मक ढंग से उसका वास्तविक आनन्द ले नहीं लेते। भारतीय योगदर्शन उस परमतत्त्व से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने का क्रियात्मक पथ बताता है। उस परमसत्ता में ही मात्र ज्ञान और विज्ञान की पराकाष्ठा है। अभी उसके पास असीम ज्ञान और विज्ञान विश्व में प्रकट करने को पड़ा है।

-श्री अरविन्द

खेल-तमाशा बहुत हुआ, अब जाग मुसाफिर, जाग !

मेरा नाम रमेश कुमार है। मैं दरभंगा, बिहार से हूँ। कोरोना के जीवन में आते ही मेरी जिन्दगी में बहुत कुछ बदल गया। पहले मेरी नौकरी चली गई और फिर उसके जाने से आए खालीपन के कारण एक उदासी, मायूसी और बेचारगी सी मन में आ गई। धीरे-धीरे चिड़चिड़ेपन, भय और डिप्रेशन ने घेर लिया। अपने आप को इन सभी परेशानियों से निकालने के लिए मैं सोशल मिडिया पर कुछ न कुछ ढूंढने का प्रयास करता रहता। कुछ समय पहले यूट्युब के माध्यम से गुरुदेव का प्रवचन सुना और सिद्धयोग दर्शन के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।

पहले-पहले तो विश्वास नहीं हुआ। फिर बहुत से साधकों के अनुभव पढ़कर मन में विश्वास जागा। अब मैंने सोचा कि इसको कर के देखना चाहिए। फिर मैंने संजीवनी मंत्र का जाप और ध्यान शुरू किया पर चुंकि मैं इतने लम्बे समय से नकारात्मक विचारों से जकड़ा हुआ था मेरा मन पूरी तरह से मंत्र जाप और ध्यान में नहीं लगता था। आश्रम फोन कर के पूछा कि कोई और उपाय बताएँ तो उन्होंने मुझे अधिक से अधिक मंत्र जाप करने की सलाह दी और समझाया कि केवल इसी मंत्र के जपने से सारे परिवर्तन स्वयं आ जाएंगे। मंत्र जाप और ध्यान के अलावा दूसरा कोई उपाय नहीं है।

जिन्दगी में ज्यादातर लोग आसान रास्ता ही ढूंढते हैं। मंत्र खुद को जपना है, वो भी 24 घंटे- इसमें मेहनत और लगन चाहिए। मेरे जैसे इंसान ने

आसान रास्ता ढूंढना चाहा। इसी तलाश में फिर से यूट्युब पर सर्च जारी रखी। तभी गुरुदेव के शिष्यों द्वारा चलाए जा रहे कुछ विडियो मिले जिसमें ऐसा बताया जा रहा था कि हम उनसे सम्पर्क करें, फिर वो एक ऐसे व्यक्तिसे हमारा सम्पर्क करवा देंगे जो गुरुदेव से सीधा सम्पर्क रखता है। फिर वो व्यक्ति हमें उपाय बताएगा जिसको करने से हम 40 दिन में ही ठीक हो जाएंगे।

मुझे ये जान कर खुशी भी हुई और गुस्सा भी आया। खुशी इस बात की कि मेरा काम आसान हो गया और गुस्सा इस बात का कि जब इतना आसान रास्ता है तो फिर संस्था ने ये क्यों कहा कि आप को खुद ही मंत्र जपना होगा, जो परिवर्तन आएगा मंत्र जाप से ही आएगा और बाहर से आप को कोई कुछ नहीं दे सकता।

इसी उधेड़बुन में मैंने गुरुदेव के बहुत सारे प्रवचन सुन डाले। एक के बाद एक, मैं उनके सारे प्रवचन सुनता गया। मेरे सर पर सच्चाई जानने का जुनून सवार हो गया था। गुरुदेव की सभी स्पीच सुनने के बाद एक बात जो स्पष्ट सामने आई वो यह कि गुरुदेव ने किसी और व्यक्तिके माध्यम से उपाय की बात कभी नहीं कही। यहाँ तक कि एड्स के मरीज के लिए भी उन्होंने कहा कि मंत्र जाप करो उसी से ये ठीक हो जाएगा तो फिर मैं तो कम से कम किसी असाध्य बीमारी से भी ग्रस्त नहीं था। गुरुदेव ने यह भी स्पष्ट कहा है कि मंत्र जाप और ध्यान के अलावा कुछ भी और करने की जरूरत नहीं है, उसके आगे कि ड्यूटी उनकी है। सभी प्रकार के कष्टों के

लिए एक ही बात बताई है- मंत्र जाप और ध्यान।

सच अब मेरे सामने था..... मुझे जवाब मिल चुका था। फिर मैंने सच्चे मन से गुरुदेव से प्रार्थना करके दिन-रात मंत्र जाप और ध्यान करना शुरू किया। विश्वास कीजिए, मात्र 10 दिन में मुझे इतना आराम मिल गया कि मैं स्वयं चकित था।

अगर आप शांत होकर सोचेंगे तो आपको मेरी बात समझ आ जाएगी कि कुछ लोगों द्वारा सोशल मिडिया पर गुरुदेव के नाम से तमाशा चलाया जा रहा है। जिस गुरु ने बार-बार यह कहा कि आप सीधा मुझसे जुड़ो, बाहर से आपको कोई कुछ नहीं दे सकता, आज उसी गुरु का नाम लेकर ये लोग कह रहे हैं कि हमसे सम्पर्क करो और हम किसी और से सम्पर्क कराएंगे जो गुरुदेव से सीधा सम्पर्क रखता है और फिर उनके उपाय से आप ठीक हो जाओगे। कैसी विचित्र विडम्बना है?

हम सबको इस तमाशे का बन्दर नहीं बनना है।ऐसे लोगों को मेरे और आप जैसे बन्दर चाहिए अपना खेल जारी रखने के लिए वरना उनका खेल कैसे चलेगा? मैं अपने सभी गुरुभाई और बहनों से कहना चाहता हूँ कि केवल गुरुदेव से जुड़ें।

अब फैसला आपके हाथ में है कि क्या आप सच में गुरुदेव से जुड़ने के लिए गंभीर हैं या अभी भी इस सौभाग्य को छिटक कर ऐसे लोगों के साथ समय बर्बाद करने को राज़ी हैं जो गुरुदेव के नाम पर अपना खेल-तमाशा चला रहे हैं?

गतांक से आगे...

स्वर्णमयी भारत के बढ़ते कदम

श्री अरविन्द आश्रम से प्रकाशित पुस्तक –''भारत का पुनर्जन्म'' में विषद वर्णन किया है कि किस प्रकार विदेशी आतताईयों व भारत के भीतर सत्ता लोलुप लोगों ने इस देश का शोषण किया, लूटा और अब कल्कि के आगमन से किस प्रकार देश अपने उदीयमान आलोक से वापस विश्व गुरु बनेगा और पूरे विश्व को शांति का पैगाम देगा। साधकों के ज्ञान बोध के लिए क्रमशः हर अंक में कुछ जानकारियाँ वर्णित की जाएंगी।

यह धारणा कि मुसलमानी हुल्लड़बाजी को उभार कर वर्तमान आंदोलन को दबाया जा सकता है, अनर्गल है; और जो इस धारणा को पोषित करते हैं वे यह भूल जाते हैं कि धौंस जमानेवाला पुरुषों में न तो सबसे अधिक शक्तिशाली होता है और न ही सबसे अधिक वीर; और यह इसलिए क्योंकि हिंदू का आत्मसंयम, जिसे गलती से कायरता कहा गया, उसके राष्ट्रीय चरित्र का प्रमुख गुण रहा है, और जब भी कोई पावन परिस्थिति इसकी माँग करती है, वह सीधे वार करने में तथा कठोर आघात करने में बिल्कल असमर्थ रहता है। न ही भारत के विभिन्न भागों में हाल में ब्रिटिश द्वारा षडयंत्रित हिंदुओं और मुसलमानों के बीच हुए झगड़ों में यह साबित हुआ कि सौम्य हिंदु अपने अधिकारों और स्वाधीनताओं की रक्षा करने में इतना बेबस और असमर्थ है जितना अपने विदेशी दुश्मनों द्वारा चित्रित किया गया है।

यह धारणा, कि एक मुस्लिम अध्यक्ष को चुन लेने से कांग्रेस-विरोधी मुसलमान मान जाएँगे एक भ्रांति है जिसको अनुभव ने बार-बार उजागर कर दिया है।

जब से कांग्रेस का जन्म हुआ तब से इस महान राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व जिनके हाथों में रहा उन्होंने इस देश की आम जनता को इसका निर्णय करने के

www.the-comforter.org

अधिकार से निरंतर वंचित रखा कि उनकी ओर से और उनके नाम पर क्या कहा अथवा किया जाएगा। जो प्रतिनिधि देश के सभी भागों से एकत्र किये जाते हैं वे किन्हीं सार्वजनिक विषयों पर विचार- विमर्श करने के लिए नहीं बल्कि केवल उन निर्णयों पर अपने समर्थन की छाप लगाने के लिए जो आधे दर्जन लोगों की गुप्त सभाओं में पहले से ही लिये जा चुके होते हैं।

नेतागण तभी सम्मान के पात्र बन सकते हैं जब वे अपने देश के प्रमुख सेवक होने की भावना से काम करें न कि मालिक और तानाशाहों की भावना से।

राजनीति क्षत्रिय का कर्म है और यदि हमें स्वतंत्रता के लिए नैतिक रूप से योग्य बनना है तो हमें क्षत्रियोचित गुणों का विकास करना होगा।

हम जितना जोर दे सकते हैं उतने जोर के साथ इस बात को दोहराते हैं कि पुरातन काल के क्षत्रिय को समाज-व्यवस्था के हितों की रक्षा करने के अपने प्रथम और सबसे महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य को निभाने के लिए एक बार फिर अपना अधिकारपूर्ण स्थान ग्रहण करना पड़ेगा। दाहिनी भुजा की शक्ति के बिना मस्तिष्क नपुंसक है।

राष्ट्र के विकास में जो भी रोड़े अटकाता है, उस पर आघात करने में हमें बिल्कल भी मुरौवत नहीं करनी चाहिए और जो जैसा है उसे वैसा करार देने में न कोई लाग-लपेट करना चाहिए और न कभी भी डरना चाहिए। गंभीर राजनीति में अत्यधिक सीधे स्वभाव, चक्षु-लज्जा (सदैव हँसमुख और मृदुल रहने की चाह) से कभी भी काम नहीं चलने का। सच्चाई और अंतश्चेतना को व्यक्तिओं के प्रति आदर को हटाकर स्थान देना चाहिए; और यह माँग कि अपने विरोधियों की अवस्था और पिछली सेवाओं का ख्याल कर हमें चुप रहना चाहिए, राजनीति की दृष्टि से अनैतिक और अनुचित है। खुला आक्रमण, बेमुरोवत आलोचना, तीखा से तीखा व्यंग, अधिक से अधिक चोट पहुँचाने वाली विडंबना – ये सारे तरीके

www.the-comforter.org

राजनीति में बिल्कुल वाजिब और अपरिहार्य हैं। हमारे पास कठोर बातें कहने को हैं; तो चलो उन्हें कठोरता के साथ ही कह डालें, हमारे पास कड़े काम करने को हैं; तो चलो उन्हें कड़ाई के साथ कर डालें। पर शक्तिके पतित होकर हिंसा में परिणत होने का और कठोरता क्रूरता में परिवर्तित होने का खातरा सदैव बना रहता है, और जहाँ तक मनुष्य के लिए संभाव है, इसे बचाना चाहिए।

विश्व के इतिहास में ऐसे युग आते हैं जब उसकी नियति का नियंत्रण करने वाली अलक्ष्य सत्ता परिवर्तन के विनाशकारी आवेग और पुरातन के प्रति उत्कट अधीरता से भरी जैसी प्रतीत होती है। महामाता, आद्यशक्ति ने राष्ट्रों को अपने हाथ में लेकर उन्हें नया रूप देने का संकल्प किया है। तोपों की आवाज और फौजों के कदमों के धमाके, बड़े-बड़े अधःपतनों के चकना-चूर होने और तेज तथा हिंसात्मक क्रांतियों के शोरगुल से भरे ये युग तीव्र विनाश और सशक्त सृजन के युग हैं। दुनिया को गलानेवाली कढ़ाई में डाल दिया जाता है और वह नया रूप, नये आकार लेकर निकल आती है। वे ऐसे युग हैं जब बुद्धिमानों की बुद्धिमत्ता चकरा जाती है और प्राज्ञों की प्रज्ञा हास्यास्पद बन जाती है।....

बंकिमचंद्र चटर्जी की अपने राष्ट्र के प्रति परम सेवा यह थी कि उन्होंने हमें अपनी माता की झाँकी दिखालाई। जब तक कि मातृभूमि मन की आँख को पृथ्वी के एक विस्तार अथवा व्यक्तियों के एक समूह से और कुछ अधिक के रूप

में अपने को प्रकट नहीं करती, जब तक कि वह एक महान दैवी और मातृक शक्ति के रूप में सुंदरता की ऐसी आकृति में अपने को नहीं ढालती जो मन पर प्रभुत्व जमा सके और हृदय को ग्रहण कर सके, तब तक ऐसी देशभक्ति जो चामत्कारिक कार्य संपन्न कर सकती है और एक विनाशोमुख राष्ट्र को बचा सकती है, पैदा नहीं होती।

बत्तीस वर्ष पहले बंकिम ने अपना महान गीत लिखा था और बहुत कम ने सुना: पर लंबी भ्रांतियों से एकाएक जागने के क्षण में बंगाल के चारों ओर तलाश करने लगे और एक होनहार घड़ी में कोई बंदे मातरम गा उठा। मंत्र फूंक दिया गया और केवल एक दिन में ही समूचे लोग देश भक्ति के धर्म में परिवर्तित हो गये। भारत माता ने अपने को प्रकट कर दिया था।

प्रत्येक राष्ट्र को उन राजनैतिक सिद्धांतों का पालन करना चाहिए जो उसकी प्रकृति और परिस्थितियों के सर्वथा अनुकूल हों क्योंकि उसके लिए वही सबसे उत्तम है, जो उसे निश्चित रूप से और पूरी तरह राष्ट्रीय स्वतंत्रता और आत्मोपलब्धि की ओर ले जाये।

हमारी नियति की इस गंभीर संक्रांति में हमारे लोग अपना धैर्य न खोयें अथवा हतबुद्धि न हो जायें और निराशा से अपनी आत्माओं को अभिभूत और हतोत्साह न होने दें। जो लड़ाई हम लड़ रहे हैं, वह प्राचीन युद्धों जैसी नहीं है कि जिनमें जब राजा अथवा नेतृत्व करने वाला गिर गया तो सेना भाग खड़ी हुई। आज के युद्धों में हम जिस राजा का अनुसरण करते हैं वह हमारी अपनी मातृभूमि है, पवित्र और अविनाशी; आगे बढ़ने में जो हमारा नेतृत्व करता है वह स्वयं सर्वशक्तिमान ईश्वर है, हमारे भीतर और बाहर निहित वह तत्त्व जिसे तलवार काट नहीं सकती, पानी डुबा नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकती, न निर्वासन हमसे अलग कर सकता है और न बंदीखाना बंदी बना सकता है।

क्रमशः अगले अंक में...

30 दिसम्बर 2021

सूर्यनगरी जोधपुर आश्रम सहित अन्य शाखाओं में बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) की बरसी श्रद्धा एवं भक्ति भाव से मनाई गई।

जोधपुर

कोटा

बालेसर

सूर्यनगरी जोधपुर आश्रम सहित अन्य शाखाओं में बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) की बरसी श्रद्धा एवं भक्ति भाव से मनाई गई।

खड़िया, कोटा

बाड़मेर

गंगापुरसिटी

दिसम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

17 दिसम्बर, 2021 कोटा स्थित राजकीय अंबेडकर छात्रावास में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम।

17 दिसम्बर, 2021 कोटा स्थित राजकीय अंबेडकर छात्रावास महावीर नगर प्रथम में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम।

25 दिसम्बर, 2021 राजकीय चिकित्सालय राजसमंद में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम।

दिसम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

27 दिसम्बर, 2021 राजसमन्द जिले के दत्तात्रेय कॉलेज के एनएसएस कैंप में सिद्धयोग कार्यक्रम।

28 दिसम्बर, 2021 राजसमंद स्थित राजकीय आईटीआई कॉलेज में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग कार्यक्रम।

28 दिसम्बर, 2021 राज. उ. मा. विद्यालय, नारोली, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

दिसम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

28 दिसम्बर, 2021 राज. उ. मा. विद्यालय, वगासन, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

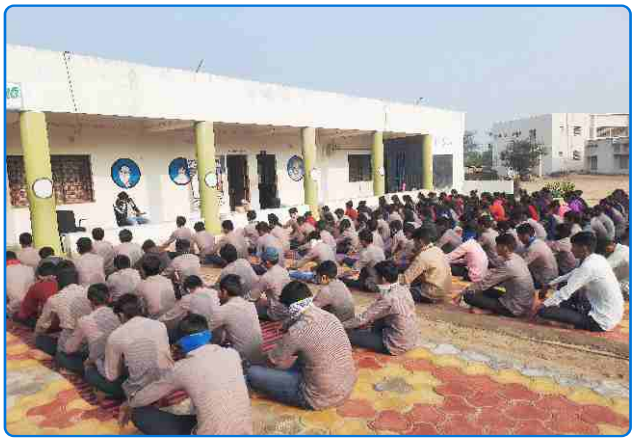

28 दिसम्बर, 2021 राज. उ. मा. विद्यालय, वांतडाउ, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

28 दिसम्बर, 2021 राज. अपर प्रा. विद्यालय, रडका, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

दिसम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

28 दिसम्बर, 2021 राज. अपर प्रा. विद्यालय, वगासन, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

28 दिसम्बर, 2021 राज. अपर प्रा. विद्यालय, वांतडाउ, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

29 दिसम्बर, 2021 राजसमंद स्थित श्री बाल कृष्ण राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के एनएसएस कैंप में सिद्धयोग कार्यक्रम।

दिसम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

29 दिसम्बर, 2021 राज. मा. विद्यालय, वामी, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

29 दिसम्बर, 2021 राज. अपर प्रा. विद्यालय, वामी, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

29 दिसम्बर, 2021 राज. उ. मा. विद्यालय, भापड़ी, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

दिसम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

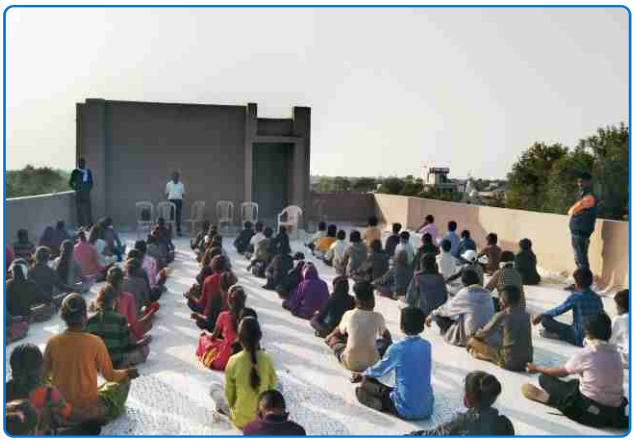

29 दिसम्बर, 2021 राज. उ. मा. विद्यालय, भापी, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

29 दिसम्बर, 2021 राज. उ. मा. विद्यालय, पीलुड़ा, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

29 दिसम्बर, 2021 राज. अपर प्रा. विद्यालय, भापड़ी, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

दिसम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

29 दिसम्बर, 2021 राज. अपर प्रा. विद्यालय, पीलुड़ा, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

29 दिसम्बर, 2021 सरस्वती अपर प्रा. विद्यालय, पीलुड़ा, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

30 दिसम्बर, 2021 राज. उ. मा. विद्यालय, दीपड़ा, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

दिसम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

30 दिसम्बर, 2021 राज. अपर प्रा. विद्यालय, दीपड़ा, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

30 दिसम्बर, 2021 राज. अपर प्रा. विद्यालय, मेसरा, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

30 दिसम्बर, 2021 राज. अपर प्रा. विद्यालय, जबरा, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

दिसम्बर-2021 में विभिन्न स्थानों पर आयोजित सिद्धयोग ध्यान कार्यक्रमों की झलक

30 दिसम्बर, 2021 राज. अपर प्रा. विद्यालय, मियाल, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

30 दिसम्बर, 2021 राजेश्वर उ. मा. विद्यालय, मेसरा, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

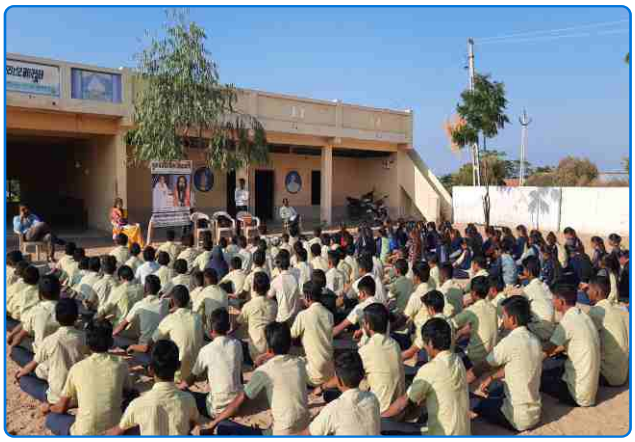

30 दिसम्बर, 2021 सरस्वती उ. मा. विद्यालय, जबरा, ब्लॉक-थराद, जिला-बनासकांठा, गुजरात में सिद्धयोग कार्यक्रम।

साधना विषयक बातें

गतांक से आगे...

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग पर चलने में सहायता मिल सके।

प्रश्नः- मैं इस समय तुम्हारी नीरवता और शांति तो ग्रहण कर रही हूँ लेकिन तुम्हारी चेतना नहीं। प्रयास हर समय यही रहता है कि किसी भी अवस्था में, कामकाज करते, बातचीत करते समय तुम्हारे प्रति सचेतन हो सकूं...।

उत्तरः- पहले शांति उतरती है-समस्त आधार शांत न हो तो ज्ञान का आना दुष्कर है। शांति स्थापित हो जाने पर शक्ति की विशाल अनन्त चेतना आती है, उसमें डूब जाने से अहंभाव भी मग्न हो जाता है, ह्रास को प्राप्त हो जाता है-अंत में उसका नामोनिशान भी नहीं रहता। रह जाता है केवल भागवत अनंत के भीतर शक्ति का सनातन अंश।

बाधाएँ पूरी तरह आसानी से पिंड नहीं छोड़तीं। खुलते-खुलते, चेतना बढ़ते-बढ़ते शरीर चेतना तक जब रूपांतरित होती है तब बाधाएँ पूरी तरह नष्ट होती हैं। उससे पहले कम हो जायेंगी, बाहर निकल जायेंगी, बाहर-ही-बाहर मंडरायेंगी-तुम उनसे

www.the-comforter.org

विचलित न हो, अपने को असंपृक्त करके रखो। उन्हें अपनी समझ और स्वीकार न करो-ऐसा हो जाये तो उनका दम कम हो जायेगा।

प्राण का ध्वंस नहीं करते, प्राण को त्याग कर कोई काम नहीं किया जा सकता, जीवन ही नहीं रहता। प्राण का रूपांतर करना होता है, उसे भगवान् का यंत्र बनना होता है।

अपने अंदर शांति, भागवत शक्ति और प्रकाश रखकर शांतभाव से सब करती चलो-और किसी चीज की जरूरत नहीं-पथ परिष्कृत हो जायेगा।

शून्यावस्था दो तरह की होती है-भीतर भौतिक तामसिक जड़ निश्चेष्टता और दूसरी शून्यता और निश्चेष्टता आती है ऊर्ध्व चेतना की विराट् शांति और आत्मबोध उतरने से पहले इन दोनों में से कौन-सी आयी है यह देखना होगा, क्योंकि दोनों में ही सब स्तब्ध हो जाता है, आंतरिक चेतना शून्य हो पड़ी रहती है।

जब शून्यावस्था आये तब शांत हो शक्ति को पुकारो। शून्यावस्था सब की होती है। पर वह शून्यावस्था होनी चाहिये शांत, तभी साधना के लिये उपकारी होती है-अशांत होने से वह फलप्रद नहीं होती।

अशुभ शक्ति को छोड़ और कौन इतना नीचे खींच सकता है, दुर्बल और उथलपुथल करके फेंक सकता है? साधक प्रश्रय देते हैं इसीलिये वातावरण में इस तरह की अनेक शक्तियाँ घूम रही हैं। यदि तुम्हारे ऊपर आ पड़ता है तो शक्ति को पुकार कर उनका प्रत्याख्यान कर दो। वे कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। सामने टिक नहीं सकेंगी।

यह तो सभी मनुष्यों में होता है-प्रशंसा से प्रसन्न और निन्दा से दुःखी-इसमें कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं। लेकिन साधकों को इस दुर्बलता को अतिक्रम करना नितांत आवश्यक

www.the-comforter.org

है-स्तुति-निन्दा में, मान-अपमान में अविचलित रहना चाहिये। लेकिन यह आसानी से नहीं होता, समय आने पर ही होता है।

मन में जब यह विराट् अवस्था आती है तो उसका अर्थ है मन विशाल होकर विश्व-मन के साथ युक्त हो रहा है। गले इत्यादि के विराट होने का अर्थ है-उस केंद्र में जो चेतना है उसकी भी वही अवस्था शुरू हुई है।

यदि कामनाओं का पोषण करते जाओ और साधना के फल के लिये अधीर हो जाओ तो शांत और नीरव कैसे रह सकोगी? मनुष्य स्वभाव के रूपांतर जैसा बड़ा काम क्या पलक झपकते हो सकता है? स्थिर हो भागवत शक्ति को काम करने दो, ऐसा हो जाये तो समय लेकर सब हो जायेगा।

हम दूर न गये हैं और न छोड़ ही दिया है। तुम्हारे मन-प्राण जब अशांत होते हैं, जब ये सब ऊलूल-जलूल कल्पनाएं तुम्हारे मन में उठती हैं। जब कठिनाइयाँ सामने हो, अंधकार घिरा हो तो शक्ति के ऊपर भरोसा नहीं गंवाते-स्थिर भाव से उसे पुकारते हुए अचंचल बनी रहो, कठिनाई और अंधकार सरक जायेंगे।

प्रणाम या दर्शन के समय शक्ति की बाह्य आकृति देखकर यह अनुमान लगाना कि वे सुखी हैं या दुःखी, उचित नहीं है। लोग ऐसा करके केवल भूल ही करते हैं, मिथ्या अनुमान करते हैं कि शक्ति असंतुष्ट है, शक्ति कठोर

है, शक्ति मुझे नहीं चाहतीं, अपने से दूर रखती हैं इत्यादि कितनी झूठी कल्पनाएँ और उससे निराश हो अपने पथ पर अपने ही कुठाराघात करते हैं।

यह सब न कर अपने अंदर शक्ति के ऊपर उनके प्रेम और सहायता पर अटल विश्वास रखकर प्रफुल्ल शांत मन से साधना में आगे बढ़ना चाहिये। जो ऐसा करते हैं वे निरापद रहते है,-बाधाएँ, और अंधकार घिर आने पर भी वे उनका स्पर्श नहीं कर सकते। वे कहते हैं, 'नहीं, शक्ति ही हैं, वे जो करें वही अच्छा-यदि मैं उन्हें इस पल नहीं देख सक रहा तो भी वे मेरे पास ही हैं, मुझे घेरे हुए हैं, मुझे किसी का डर नहीं।' यही करना चाहिये-इसी भरोसे साधना करनी चाहिये।

तामसिक समर्पण के साथ तामसिक अहंकार का कोई संबंध नहीं। तामसिक अहंकार का अर्थ है 'मैं पापी हूँ, मैं दुर्बल हूँ, मेरी कोई उन्नति नहीं होगी, मेरी साधना नहीं हो सकती, मैं दुःखी हूँ, भगवान् ने मुझे स्वीकार नहीं किया है। मरण ही मेरा एकमात्र आश्रय है, शक्ति मुझे प्यार नहीं करती, अन्य सभी को करती हैं' आदि-आदि विचार। प्राण-प्रकृति इस तरह अपने को हीन समझ अपने पर प्रहार करती है। अपने को सबसे खराब, दुःखी, दुष्ट, निष्पीड़ित समझ अहंभाव को चरितार्थ करना चाहती है-विपरीत भाव से। राजसिक अहंकार इससे ठीक उल्टा है, मैं बड़ा हूं ऐसा समझ अपने को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना चाहता है।

सफेद प्रकाश दिव्य चेतना का प्रकाश है-नीला प्रकाश उच्चतर चेतना का-रुपहला प्रकाश है। आध्यात्मिकता का प्रकाश। यह है मन के ऊपर की ऊर्ध्व चेतना जहाँ से आते हैं शांति, शक्ति, प्रकाश इत्यादि-श्वेत कमल है शक्ति की चेतना और लाल कमल मेरी-वहाँ ज्ञान और सत्य का प्रकाश हमेशा ही विद्यमान है।

www.the-comforter.org

प्रश्नः- दो-तीन दिन से प्रायः ही तुम्हारा हाथ अपने मस्तक पर अनुभव कर रही हूँ, तुम आशीर्वाद दे रही हो जिससे कि तुम्हारी गंभीरतम शांति और चेतना में डूबी रहूँ। हर समय तुम्हारा मधुमय प्रेममय आह्वान सुन रही हूँ।

उत्तरः- यही सत्य चेतना की अवस्था और दृष्टि है। गहराई में जाने पर या बाह्य चेतना में आने पर यदि यह बनी रहती है तो भागवत उद्देश्य की तरफ सब ठीक-ठीक आगे बढ़ता रहेगा।

बहिर्जगत् के साथ संबंध तो रहना चाहिये किंतु वह सब ऊपरी सतह पर होना चाहिये-तुम अपने अंदर स्थित शक्ति के पास रहोगी और वहाँ से सब देखोगी-यही चाहिये, यही है कर्मयोग का प्रथम सोपान -इसके बाद दूसरी अवस्था है भीतर रह शक्ति द्वारा बाहरी सब कर्म इत्यादि निभाना। यदि ऐसा कर सको तो और कोई गोलमाल नहीं रह जायेगा।

पहले शक्ति को अंदर ही पाना चाहिये। बाद में जब बाह्य पूर्णतया वश में हो जाता है तो वहाँ भी सर्वदा अनुभव कर सकती हो।

सदा स्मरण रखो कि जैसी भी अवस्था हो, जितनी भी बाधाएँ आएं, जितना भी समय लगे पर शक्ति के ऊपर संपूर्ण श्रद्धा रखकर चलना होता है, तब गंतव्य स्थान पर पहुँच पाना निश्चित है-कोई भी बाधा, कितना भी विलंब, कैसी भी मंद अवस्था उस अंतिम सफलता को व्यर्थ नहीं कर सकेगी।

ठीक ही देखा। चैत्य चेतना का रास्ता है ऊपर की सत्य चेतना की ओर-उसी चैत्य को केंद्र बनाकर सारे स्तर एकमुखी हो भगवान की तरफ मुड़ना आरंभ कर रहे हैं। वही रास्ता ऊपर की ओर उठ रहा है-छोटा शिशु है तुम्हारा चैत्यपुरुष।

नारंगी रंग का अर्थ है भगवान के

www.the-comforter.org

साथ मिलन और अपार्थिव चेतना का स्पर्श।

शांत भाव से साधना करते-करते अग्रसर होओ-दुःख और निराशा को फटकने मत दो-अंत में सारा अंधकार विदीर्ण हो जायेगा।

यह भाव, यह श्रद्धा और विश्वास सदा बनाये रखना चाहिये, साधक का यही श्रद्धा और विश्वास, शक्ति के प्रधान सहायक हैं।

दृढ़, शांत मन से शक्ति के ऊपर अटूट श्रद्धा और निर्भरता रख साधना करनी होती है। अवसाद को कभी अवसर न दो। यदि आये तो प्रताड़ित कर दूर भगा दो। मैं नीच और अधम हूँ। मुझसे कुछ नहीं होगा, शक्ति ने मुझे दूर कर दिया है, मैं चली जाऊंगी, मर जाऊंगी आदि विचार यदि घेर लें तो समझ लेना कि ये सब निम्न प्रकृति के सुझाव हैं, सत्य और साधना विरोधी। इन सब भावों को कभी भी टिकने न दो।

अर्थ यही है-जो अच्छा साधक अच्छी तरह साधना करता है, उसकी साधना अच्छी होते हुए भी अहंकार, अज्ञान, वासना की छाप बहुत दिन तक उसके अंदर रह सकती है लेकिन चेतना जब खुलते-खुलते कुन्दन बनती है-जैसी तुम्हारी होनी शुरू हुई है-तब वह सब अज्ञान का मिश्रण खिसकने लगता है।

यह सब है प्राण की निरर्थक गतिरोध। योगपथ पर शांत हो चलना होता है, क्षोभ और निराशा के लिये कोई जगह नहीं।

निश्चित ही इस तरह की बात करने में क्षोभ, शक्ति के ऊपर असंतोष, दूसरों के प्रति हिंसा, विषाद, दुःख आदि प्राण की अनेक अशुद्ध गतियाँ घुस सकती हैं। इन सबको पकड़ कर मत बैठी रहो।

क्रमशः अगले अंक में...

माँगने का विवेक

हस्तिनापुर की ओर पुरोहित को भेजकर फिर पाण्डवों ने जहाँ-तहाँ राजाओं के पास दूत भेजे। इसके पश्चात् श्री कृष्णचन्द्र को निमन्त्रित करने के लिये स्वयं कुन्तीनन्दन अर्जुन द्वारका गये। दुर्योधन को भी अपने गुप्तचरों द्वारा पाण्डवों की सब चेष्टाओं का पता लग गया। उसे जब मालूम हुआ कि श्रीकृष्ण विराटनगर से द्वारका जा रहे हैं तो थोड़ी सी सेना के साथ वहाँ पहुँच गया। उसी दिन पाण्डव कुमार अर्जुन भी पहुँचे। वहाँ पहुँच ने पर दोनों वीरों ने श्रीकृष्ण को सोते हुए पाया।

तब दुर्योधन शयनागार में जागर उनके सिरहाने की ओर एक उत्तम सिंहासन पर बैठ गया। उसके पीछे अर्जुन ने प्रवेश किया। वे बड़ी नम्रता से हाथ जोड़े हुए श्रीकृष्ण के चरणों की ओर खड़े हो गये। जागने पर भगवान् की दृष्टि पहले अर्जुन पर ही पड़ी। फिर उन्होंने उन दोनों का स्वागत सत्कार कर उनसे आने का कारण पूछा। तब दुर्योधन ने हँसते हुए कहा, 'पाण्डवों के साथ हमारा जो युद्ध होने वाला है, उसमें आपको हमारी सहायता करनी होगी। आपकी तो जैसी अर्जुन से मित्रता है, वैसी ही मुझसे भी है तथा हम दोनों से एक-सा ही संबंध भी है; और आज आया भी पहले मैं ही हूँ। सत्पुरुष उसी का साथ दिया करते हैं, जो पहले आता है; अतः आप भी सत्पुरुषों के आचरण का ही अनुसरण करें।

श्री कृष्ण ने कहा-आप पहले आये हैं-इसमें तो संदेह नहीं, किन्तु मैंने पहले अर्जुन को देखा है। अतः आप पहले आये हैं और अर्जुन को मैंने पहले देखा है-इसलिये मैं दोनों की ही सहायता करूँगा। मेरे पास एक अरब गोप है, वे मेरे ही समान बलिष्ठ हैं और सभी संग्राम में जुंझने वाले हैं। उनका नाम नारायण है। एक ओर तो वे दुर्जय सैनिक रहेंगे और दूसरी और मैं स्वयं

www.the-comforter.org

रहूँगा; किंतु मैं न तो युद्ध करूँगा और न शस्त्र ही धारण करूँगा। अर्जुन ! धर्मानुसार पहले तुम्हें चुनने का अधिकार है, क्योंकि तुम छोटे हो, इसलिये दोनों में से तुम्हें जिसे लेना हो, उसे ले लो।

श्री कृष्ण के ऐसा कहने पर अर्जुन ने उन्हीं को लेने की इच्छा प्रकट की। जब अर्जुन ने स्वेच्छा से मनुष्य रूप में अवतीर्ण शत्रुदमन श्री नारायण को लेना स्वीकार किया तो दुर्योधन ने उनकी सारी सेना ले ली। इसके पश्चात् वह महाबली बलराम जी के पास गया और उन्हें अपने आने का सारा समाचार सुनाया। तब बलराम जी ने कहा, पुरुष श्रेष्ठ ! मैं श्री कृष्ण के बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता; अतः मैं उनका रुख देखकर मैंने यह निश्चय कर लिया है कि मैं न तो अर्जुन की सहायता करूँगा और न ही तुम्हारे साथ रहूँगा।

बलराम जी के ऐसा कहने पर दुर्योधन ने उनका आलिंगन किया और यह समझकर कि नारायणी सेना लेकर मैंने श्रीकृष्ण को ठग लिया है, उसने अपनी जीत पक्की समझी। इसके पश्चात् वह कृतवर्मा के पास आया। कृतवर्मा ने उसे एक अक्षौहिणी सेना दी। उस सारी सेना के सहित दुर्योधन हर्ष से फूला-फूला वहाँ से चल दिया।

इधर जब दुर्योधन श्रीकृष्ण के महल से चला गया तो भगवान् ने अर्जुन से पूछा, 'अर्जुन ! मैं तो लड़ूँगा नहीं, फिर तुमने क्या समझकर मुझे माँगा?' अर्जुन ने कहा, 'भगवन् ! मेरे मन में सदा यह विचार रहता है कि आपको अपना सारथी बनाऊँ। इस विचार में मेरी कई रात्रियाँ निकल गयी हैं। आप इसे पूरा करने की कृपा करें।' श्रीकृष्ण ने कहा, 'अच्छा,तुम्हारी कामना पूर्ण हो, मैं तुम्हारा सारथ्य करूँगा।' यह सुनकर अर्जुन को बड़ी प्रसन्नता हुई और वे श्रीकृष्ण तथा अन्य दाशार्हवंशीय प्रधान पुरुषों के साथ राजा युधिष्ठिर के पास लौट गये।

गतांक से आगे...

दिव्य जन्म और दिव्य कर्म

-श्री अरविन्द

धर्म को साधारणतया सनातन और अपरिवर्तनीय कहा जाता है, और इसका मूल तत्त्व और आदर्श है भी ऐसा ही; पर इसके रूप निरंतर बदला करते हैं, उनका विकास होता रहता है; कारण मनुष्य ने अभी उस आदर्श को प्राप्त नहीं किया है या यह कहिए कि उसमें अभी उसकी स्थिति नहीं है।

अभी तो इतना ही है कि मनुष्य उसे प्राप्त करने की अधूरी या पूरी इच्छा कर रहा है, उसके ज्ञान और अभ्यास की ओर त्याग बढ़ रहा है। और इस विकास में धर्म वही है जिससे भागवत पवित्रता, विशालता, ज्योति, स्वतंत्रता, शक्ति, बल, आनन्द, प्रेम, दिव्य जन्म और दिव्य कर्म प्रेम, शुभ, एकता, सौन्दर्य हमें अधिकाधिक प्राप्त हो। इसके विरुद्ध इसकी परछाई और इनकार खड़ा है, अर्थात् वह सब जो इसकी वृद्धि का विरोध करता है, जो इसके विधान के अनुगत नहीं है, वह जो भागवत संपदा के रहस्य को न तो समर्पण करता है, न समर्पण करने की इच्छा रखता है, बल्कि जिन बातों को मनुष्य को अपनी प्रगति के मार्ग में पीछे छोड़ देना चाहिए, जैसे अशुचिता, संकीर्णता, बंधान, अंधकार, दुर्बलता, नीचता, असामंजस्य, दुःख, पार्थक्य, वीभत्सता और असंस्कृति आदि, एक शब्द में, जो कुछ धर्म का विकार और प्रत्याख्यान है उस सबका मोरचा बनाकर सामने डट जाता है। यही अधर्म है जो धर्म से लड़ता और उसे जीतना चाहता है, जो उसे पीछे और नीचे की ओर खींचना चाहता है, यही वह प्रतिगामी शक्ति है जो अशुभ, अज्ञान और अंधकार का रास्ता साफ

www.the-comforter.org

करती है। इन दोनों में सतत संग्राम और संघर्ष चल रहा है। कभी इस पक्ष की विजय होती है, कभी उस पक्ष की।

कभी ऊपर की ओर ले जानेवाली शक्तियों की जीत होती है तो कभी नीचे की ओर खींचनेवाली शक्तियों की। मानव जीवन और मानव-आत्मा पर अधिकार जमाने के लिए जो संग्राम होता है उसे वेदों ने देवासुर संग्राम कहा है (देवता अर्थात् प्रकाश और अविभाजित अनन्तता के पुत्र, असुर अर्थात् अंधकार और भेद की संतान): जरथुस्त्र के मत में यही अहुर्मज्द-अहिर्मन-संग्राम है और पीछे के धर्मसंप्रदायों में इसी को मानव जीवन और आत्मा पर अधिकार करने के लिए ईश्वर और उनके फरिश्तों के साथ शैतान या इबलीस और उनके दानवों का संग्राम कहा गया है।

यही बात अवतार के कर्म का स्वरूप निश्चित और निर्धारित करती है। बौद्धमतावलंबी साधक अपनी मुक्ति के विरोधी तत्त्वों से बचने के लिए धर्म, संघ और बुद्ध, इन तीन शक्तियों की शरण लेते हैं। ईसाई मत में भी ईसाई जीवनचर्या, गिरिजाघर और स्वयं ईसा हैं। अवतार के कार्य में ये तीन बातें अवश्य होती हैं। अवतार एक धर्म बतलाते हैं, आत्म-अनुशासन का एक विधान बतलाते हैं, जिससे मनुष्य निम्नतर जीवन से निकलकर उच्चतर जीवन में संवर्धित हो। धर्म में, सदा ही, कर्म के विषय में तथा दूसरे मनुष्यों और प्राणियों के साथ साधक का क्या सम्बन्ध होना चाहिए, इस विषय में एक विधान भी रहता है, जैसे कि अष्टांग-मार्ग अथवा श्रद्धा, प्रेम और पवित्रता का धर्म अथवा इसी प्रकार का और कोई धर्म

www.the-comforter.org

जो अवतार के भागवत स्वभाव में प्रकट हुआ हो। इसके बाद, चूंकि मनुष्य की प्रवृत्ति के सामूहिक और वैयक्तिक पहलू होते हैं, जो लोग एक ही मार्ग का अनुसरण करते हैं उनमें स्वभावतः एक आध्यात्मिक साहचर्य और एकता स्थापित हो जाती है, इसलिए अवतार एक संघ की स्थापना करते हैं।

संघ अर्थात् उन लोगों का सख्य और एकत्व जो अवतार के व्यक्तित्व और शिक्षा के कारण एक सूत्र में बंध जाते हैं। यही त्रिक "भागवत, भक्त और भगवान्" के रूप से वैष्णव धर्म में भी है। वैष्णव-धर्मसम्मत उपासना और प्रेम का धर्म ही भागवत है, उस धर्म का जिन लोगों में प्रादुर्भाव होता है उन्हीं का संघ-समुदाय भक्त कहलाता है, और जिन प्रेमी और प्रेमास्पद की सत्ता और स्वभाव में यह प्रेममय भागवत धर्म प्रतिष्ठित है और जिनमें इसकी पूर्णता होती है वही भगवान हैं। अवतार त्रिक के इस तृतीय तत्त्व के प्रतीक हैं, वह भागवत व्यक्तित्व, स्वभाव और सत्ता हैं जो इस धर्म और संघ की आत्मा हैं, और वे इस धर्म और संघ को अपने द्वारा अनुप्राणित करते हैं, उसे सजीव बनाये रखते हैं तथा मनुष्यों को आनन्द और मुक्ति की ओर आकर्षित करते हैं।

गीता की शिक्षा में, जो अन्य विशिष्ट शिक्षाओं और साधनाओं की अपेक्षा अधिक उदार और बहुमुखी है, ये तीन बातें भी बहुत व्यापक अर्थ में प्रयुक्तहुई हैं। यहाँ की एकता सबको अपने साथ मिला लेनेवाली वह वैदांतिक एकता है जिसके द्वारा जीव सबको अपने अन्दर और अपने-आपको सबके अन्दर देखता और सब प्राणियों के साथ अपने-आपको

www.the-comforter.org

एक कर लेता है। इसलिए सब मानव सम्बन्धों को उच्चतर दिव्य अभिप्राय में ऊपर उठाना ही धर्म है।

यह धर्म भगवान् की खोज करनेवाला साधक जिस समाज में रहता है, उस समग्र मानव समाज को एक सूत्र में बाँधनेवाले नैतिक, सामाजिक और धार्मिक विधान से आरम्भ होता है और उसे ब्राह्मी चेतना द्वारा अनुप्राणित करके ऊपर उठा देता है। वह एकता, समता और मुक्त निष्काम भगवत् परिचालित कर्म का विधान देता है, ईश्वर-ज्ञान और आत्म-ज्ञान का वह विधान देता है जो समस्त प्रकृति और समस्त कर्म को अपनी ओर खींचता और आलोकित करता है, मानव-समाज को भागवत सत्ता और भागवत चेतना की ओर आकर्षित करता है, तथा भागवत प्रेम का वह विधान देता है जो ज्ञान और कर्म की शक्ति है, चरम सिद्धि है।

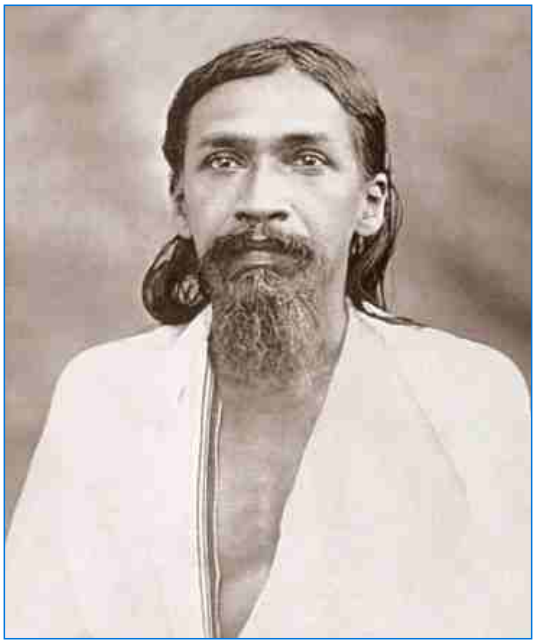

गीता में जहाँ प्रेम और भक्ति के द्वारा भगवान् को पाने की साधना बतलायी गयी है वहीं संघ और भागवत भक्तों के भागवत्प्रेम और भगवदनुसंधान में सख्य और परस्पर- साहाय्य का मौलिक भाव आ गया है, पर गीता की शिक्षा का असली संघ तो समग्र मानव-जाति है। सारा जगत् और अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार प्रत्येक मनुष्य इसी धर्म की ओर जा

रहा है। 'यह मेरा ही तो मार्ग है। जिस पर सब मनुष्य चले आ रहे हैं (मम वानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः)।' और वह भगवदन्वेषक जो सबके साथ एक हो जाता, सबके सुख-दुःख तथा समस्त जीवन को अपना सुख-दुःख और जीवन बना लेता है, वह मुक्त पुरुष जो सब दिव्य जन्म और दिव्य कर्म भूतों के साथ एकात्मभाव को प्राप्त हो चुका है, वह समग्र मानव-जाति के जीवन में ही वास करता है, मानव-जाति के अखिलांतरात्मा के लिए, सर्वभूतांतरात्मा भगवान् के लिए ही जीता है, वह लोक-संग्रह के लिए अर्थात् सबको अपने-अपने विशिष्ट धर्म में और सार्वभौम धर्म में स्थित रखने के लिए, उन्हें सब अवस्थाओं और सब मार्गों से भगवान् की ओर ले जाने के लिए कर्म करता है।

यद्यपि इस स्थल पर अवतार श्रीकृष्ण के नाम और रूप में प्रकट हैं पर वे अपने मानव-जन्म के इस एक रूप पर ही जोर नहीं दे रहे, बल्कि उन भगवान् पुरुषोत्तम की बात कह रहे हैं जिनका यह एक रूप है। समस्त अवतार जिनके मानव जन्म हैं और मनुष्य जिन-जिन देवताओं के नाम और रूप की पूजा करते हैं, वे सब भी उन्हीं के रूप हैं। श्रीकृष्ण ने जिस मार्ग का वर्णन किया है उसके बारे में यद्यपि यह घोषित किया गया है कि यही वह मार्ग है जिसपर चलकर मनुष्य सच्चे ज्ञान और सच्ची मुक्ति को प्राप्त कर सकता है, किन्तु यह वह मार्ग है जिसमें अन्य सब मार्ग समाये हुए हैं, उनका इसमें बहिष्कार नहीं है।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

सिद्ध-योगियों की महिमा

साधकों के ज्ञान बोध के लिए स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की पुस्तक 'अंतिम रचना' के लेख क्रमशः शुरू किये हैं, आशा है साधकों की आराधना में सहायक सिद्ध होंगे। उनको प्राचीन काल की आराधना की कठिनाईयों के बारे में जानकारी मिलेगी, कितनी कठिन आराधना थी और सद्गुरुदेव सियाग ने अति सहज में सिद्धयोग को धरती पर मानव मात्र के कल्याण के लिए उतारा है।

क्रियाशक्ति ने अपना उत्तरदायित्व संभाल लिया। महाराजश्री का लल की ओर झुकाव बढ़ता गया, लल विषयक कई अनुभूतियाँ होने लगीं। लल का जीवन वृत्तान्त खुलता चला गया। पर जैसा कि महाराजश्री का स्वभाव था वह अपने इस प्रकार के अनुभवों की चर्चा सार्वजनिक करने में संकोच करते थे।

चाहे भर्तृहरि हों, स्वामी नागनाथ हों अथवा शीलनाथ महाराज या अन्य कोई महापुरुष, किसी के साथ भी अपने अनुभवों के बारे उन्होंने न कभी चर्चा की अथवा न पुस्तक या लेख में ही कोई बात लिखी। उनका जीवन अनुभूतियों से भरपूर था किन्तु उनके साहित्य में किसी अनुभूति का कोई उल्लेख नहीं। इस विषय में लल तथा महाराजश्री का स्वभाव तथा दृष्टिकोण एक समान था। लल जंगलों, पर्वतों, कन्दराओं तथा खण्डहरों में डोलती फिरी, कई महापुरुषों से मिली किन्तु उसने कभी भी किसी से इसकी चर्चा नहीं की। महाराजश्री ने अपने साधन में कई महापुरुषों के दर्शन किए, सत्संग किया, आशीर्वाद लिया, किन्तु किसी को नहीं कहा। लल के प्रति उनके हृदय का भाव तथा श्रद्धा बढ़ती चली गई।

देवास से ऋषिकेश के लिए प्रस्थान करने से पूर्व मैं लल के बारे में लिखी पुस्तक ही पढ़ रहा था। चलते समय भी

www.the-comforter.org

उस पुस्तक को अपने साथ ही रख लिया था। इस संबंध में पढ़ने पर, मन में और अधिक जानने की जिज्ञासा पैदा हो गई तथा कई प्रकार के विचार, भाव एवं कई तरह के संशय भी पैदा हो गए। मैंने अनुकूल अवसर मिलने तक, महाराजश्री से स्पष्टीकरण के लिए, मन में सहेजकर रख लिया। सच पूछा जाए तो लल का वृत्तान्त पढ़कर मुझे डर लगने लगा था ऐसा उत्कत वैराग्य, अनुराग, ऐसी कठिन साधना, ऐसी मन की निर्मलता तथा सहनशीलता इस जन्म में मुझ से संभव दिखाई नही देते थे।

इनके अभाव में आध्यात्मिक उन्नति की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। लल के वृत्तान्त से यह स्पष्ट था कि यह सब अनिवार्य है। यदि अध्यात्म पर चल पाना इतना ही कठिन है तो कम से कम, इस जन्म में, मेरी उन्नति संभव नही। मैं पुनः एक बार फिर अध्यात्म-क्षेत्र में अपने प्रवेश के निर्णय पर विचार करने लगा। जब कुछ समझ नहीं आया तो सब कुछ महाराजश्री पर छोड़ दिया।

मेरा दूसरा प्रश्न जिसने मुझे परेशान कर रखा था यह था कि लल विषयक किसी भी पुस्तक में, कहीं पर भी, शक्ति-जागृति अथवा शक्तिपात का उल्लेख नहीं था। तो क्या लल ने शक्ति जागृति के बिना ही अध्यात्म की इतनी उच्च ऊँचाइयों को छू लिया था। साहित्य के अनुसार लल जन्म-सिद्ध थी। अकल्पिता, सिद्धियों का भण्डार उसके पास था। भूत एवं भविष्य उसके लिए खुली पुस्तक के समान थे। क्या वह यह सब, शक्ति-जागृति के बिना ही प्राप्त कर गई थी? क्या यह संभव है? अन्तर की ओर गए बिना, अन्तर की विभूतियों को प्राप्त करने की कल्पना कैसे की जा सकती है?

भक्तों-शिष्यों की भीड़ महाराजश्री को विदा करने के लिए रेलवे-स्टेशन पर उपस्थित थी। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने तथा शीघ्र ही लौट आने का आग्रह हो रहा था। महाराजश्री भी

www.the-comforter.org

काफी प्रसन्नचित्त दिखाई दे रहे थे। जब तक गाड़ी चल नहीं दी महाराजश्री लोगों के साथ व्यस्त बने रहे। गाड़ी चलने के पश्चात् वह न जाने कौन सी दुनिया में खो गए थे। मैंने कूपे का दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया था। उज्जैन वहाँ से केवल 35 किलोमीटर दूर है, जहाँ साधकों की भीड़, महाराजश्री के दर्शनों को आतुर, मिलने वाली थी। महाराजश्री की आँखें बंद थीं तथा चेहरा एकदम गंभीर था। ऐसी परिस्थिति में कोई बात करना संभव नहीं था किन्तु मेरे अन्तर में लल विषयक प्रश्न फिर से जाग उठे थे। मेरा मन इन प्रश्नों को लेकर गहरे उतरता जा रहा था। एक अजीब प्रकार की उद्विग्नता ने मुझे दबोच लिया था। मैंने कई बार मन को झटककर, विचार-चक्र से निकलने का प्रयत्न किया किन्तु विचारों की तरंगे एक के पश्चात् एक, निरन्तर उभर रही थीं तथा मैं उनके साथ बहे जाने पर विवश था।

उज्जैन आया तो महाराजश्री ने आँखे खोल दी। वे लोगों से मिल रहे थे, बातें भी कर रहे थे, किन्तु ऐसा स्पष्ट प्रतीत हो रहा था जैसे यह सब करते हुए भी, उनका मन उनका साथ नहीं दे रहा था। उज्जैन में दस मिनट गाड़ी रुकी तथा महाराजश्री ने किसी प्रकार समय बिताने की औपचारिकता पूरी की। जब गाड़ी वहाँ से चली तो वे आँखें खुली होने पर भी वहाँ नहीं थे। संभवतः महाराजश्री का मन अतीत की किसी गहन रहस्यमयी घटना के पुनर्प्रस्तुतिकरण का साक्षी बन रहा था। जब तक नागदा स्टेशन नहीं आ गया, महाराजश्री की हालत ऐसी ही बनी रही।

जब गाड़ी नागदा स्टेशन से आगे बढ़ी तब तक महाराजश्री बहुत कुछ स्वस्थ तथा स्वाभाविक हो चुके थे। थोड़ी देर तक उन्होंने इधर-उधर की चर्चा की, कुछ फल खाए तथा अखबार पढ़ा। अब तक महाराजश्री सामान्य हो चुके थे। अब बातें करते हुए मुस्कराहट का भाव भी उनके चेहरे पर देखा जा सकता था।

www.the-comforter.org

मैंने उचित अवसर देखकर लल का विषय छेड़ दिया तथा मन की बात कह दी, 'गुरु महाराज ! मैंने लल के विषय में पुस्तक पढ़ ली है तथा कई बार आपके तत्संबंधी विचार भी सुने हैं। मेरे अन्तर में कुछ प्रश्न तथा शंकाएँ उठ रही हैं। हमारे जैसों के लिए लल के समान अनुराग-वैराग्य, जीवन में अनुशासन तथा नियंत्रण, साधना एवं मनोनिग्रह का निर्वाह कर पाना कल्पना से परे है। न हम में वह संकल्प की दृढ़ता है, न बुद्धि का विवेक है, न भाव की प्रबलता है और न ही समर्पण है। जबकि इसके बिना अध्यात्म-लाभ की बात सोचना भी निरर्थक है तो हम जैसों का क्या होगा ?

दूसरा प्रश्न यह है कि लल के जीवन में शक्ति-जागृति अथवा शक्तिपात् का कोई उल्लेख पढ़ने में नहीं आया तो क्या लल ने शक्ति-जागृति के बिना ही अध्यात्म की इतनी ऊँची ऊँचाई को छू लिया था ?

महाराजश्री ने मेरी बात ध्यान से सुनी। कुछ देर तक चलती गाड़ी में से बाहर की ओर देखते रहे, फिर कहने लगे, 'तुम्हारा प्रथम प्रश्न साधकों के अनुकूल नहीं है। आध्यात्मिकता का विषय अत्यन्त कठिन अवश्य है, सर्वस्व त्यागकर ही कुछ पाया जा सकता है तथा जगत को, वासना को, अंहकार को, अपने मिथ्या अस्तित्व को त्याग पाना कोई सरल कार्य नहीं है । कामनाएं-वासनाएं जीव में गहरे-तक उतर चुकी हैं। सामान्य मनुष्य के लिए जगत् प्रत्यक्ष है जब कि अध्यात्म का विषय काल्पनिक, भावात्मक, तर्क से सिद्ध करने योग्य है। मन को लाख जगत से हटाओ, किन्तु वह तो बार-बार फिर भी वहीं जाता है। ऐसी परिस्थिति अनुराग-वैराग्य तथा आन्तरिक साधन की लम्बी, कठिन, तीखी,ऊब चढ़ाई चढ़ना पर्याप्त कष्ट साध्य है। इसके लिए असीम सहनशीलता एवं साधना के प्रति अखाण्ड समर्पण की आवश्यकता है। सामान्य जन यह चढ़ाई चढ़ने का साहस ही नहीं करते।

चढ़ाई के नीचे ही बैठे-बैठे बातें बनाया करते हैं। केवल बनाने से ही कोई चढ़ाई नहीं चढ़ सकता। जो चढ़ता है वही चढ़ाई चढ़ता है। सारी बातों को जानते-समझते हुए भी प्रभु-प्रेमी साधक साधन-भक्ति के क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है तो उसकी अत्यन्त प्रबल धारण-भावना तथा निर्मल-वैराग्य के कारण ही ऐसा हो पाता है।

वह जानता है कि रपटीले-पथरीले- कण्टीले कठिन मार्ग पर फिसलना-गिरना भी होगा ही। कई प्रकार के व्यवधान भी उपस्थित होंगे। कई बार अपना मन भी बहक जाएगा। अन्तर के विकार, वासनाएँ, शंकाएँ तथा भ्रान्तियाँ भी बार-बार चित्त को विचलित करने का भरसक प्रयास करेंगे। किन्तु वह ईश्वर पर पूर्ण-विश्वास करते हुए, उसके प्रति समर्पण भाव से युक्त होकर, शुभाशुभ सभी कुछ ईश्वर-चरणों को अर्पण कर, इस कठिन तथा कांटों भरी यात्रा पर कदम बढ़ा देता है।

वह यह भी भली भांति जानता है कि यह यात्रा एक दिन में पूरी हो जाने वाली नहीं है। जन्म-जन्मान्तर तक गिरते-उठते-संभलते लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना होगा। उसे अपनी कमजोरियों तथा कमियों का भी अहसास होता है। वह यह भी जानता है कि संसार उसके मार्ग में रोड़े अटकाएगा, अतः वह इन सारी कठिनाइयों, समस्याओं तथा विपदाओं का सामना करने का मन बनाकर, साधन के परिणाम से लक्ष्य हटाकर, अपने-आपको साधन-भक्ति तक ही सीमित रखने का भाव रखता है। वह तैल धारावत् निरन्तर साधन किए जाता है, प्रति दिन, जन्म-जन्मान्तर तक। न असफलताओं से भयभीत या निराश होता है, न व्यवधानों से हतोत्साहित । चलना और चलना। सावधानी पूर्वक चलना। पूरे उत्साह तथा धैर्य से चलना । परिणाम से उदासीन होकर चलना। कभी तो गंतव्य पर पहुँचेगा ही। किन्तु तुम तो चलने से

पहले ही अपनी कमज़ोरियां तथा कमियां गिनाने लग गए। यदि समझते हो कि तुम्हारे में कमज़ोरी है तो शक्ति संचय करो । कोई कमी है तो उसे दूर करो। अपनी ताकत नहीं हो तो भगवान की ताकत के सहारे चलो।

कभी वह भी समय था कि लल कामनाओं तथा वासनाओं में डूबी एक साधारण नारी थी। एकदम विषय-भोगी मन, अध्यात्म तथा अनुराग से एकदम दूर, अंदर-बाहर विकारों में उलझी हुई, संसार को सत्य मानकर उसके प्रति पूरी तरह आसक्त। फिर उसका समय बदला। भरी जवानी में उसके पति उसे बिलखता छोड़कर स्वर्ग सिधार गया। लल की आँखों में अंधकार छा गया। जीवन कैसे कटेगा? उसकी देख-भाल कौन करेगा? उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा थी। तभी एक वृद्ध-पुरुष ने समझाया, 'बेटी ! जो होना था हो गया, अब उसी को लेकर रोतेधोते बैठे रहने से क्या लाभ? अब तू इस बुराई में से अच्छाई का मार्ग निकाल। प्रभु के भजन में अपने-आपको लगा दे। तुम्हारे पति ने मरकर, तुम्हारा भजन करने का मार्ग साफ कर दिया है। भगवान जो करता है, अच्छा ही करता है किन्तु जीव इस बात को नहीं समझ पाता। उसकी समझ छोटी तथा खोटी है। दूर तक देख नहीं पाता। भगवान के किए पर उसे विश्वास नहीं होता, इसलिए वह रोता-चिल्लाता है। क्या पता तेरे पति-वियोग में तेरे कल्याण का मार्ग छिपा हो, इस बात को कौन जानता है।'

लल को बात कुछ ठीक प्रतीत हुई। उसने सोचा, कहते तो ठीक हैं। संसार के पीछे भागकर तो अब जिन्दगी कटेगी नहीं, भगवान का भजन ही एक रास्ता है। अशुभ में से शुभ की ओर जाने का मार्ग, अंधेरी कालिमा में सुख-शान्ति की एक प्रकाश किरण, जल में डूबते व्यक्ति को नदी के पार ले जाने वाला जहाज।

यही है किसी बुद्धिमान मनुष्य की जीवन की अनुभूतियों का निचोड़।

उसने सोचा, फिर सोचा,रातभर सोचा तथा निर्णय करके भजन में प्रवृत्त हो गई। भजन करने से शान्ति तो मिलती ही है।

संसार की अनावश्यक तथा मन को चंचल करने वाली बकवास सुनने,वासना तथा कुवृत्तियों को बढ़ाने वाले दृश्यों को देखने, गन्दे-भद्दे कार्यक्रमों में सम्मिलित होने तथा उत्तेजक वार्तालाप में रुचि लेने के लिए उसके पास समय ही नहीं था। वह अधिक से अधिक, धार्मिक-कार्यों में ही समय व्यतीत करने लगी।कभी मंदिर में दर्शन के लिए जाती तो कभी सत्संग सुनने। घर में पूजा पाठ, जप, कीर्तन अथवा अध्ययन में से किसी में लगी रहती थी। जितना समय परमार्थ में लगाती थी उतना समय जगत का त्याग करने की दिशा में व्यतीत होने लगा था। उसके जीवन की रंगत बदलने लगी थी।

आरंभ में मन ने कुछ उपद्रव किया। वह तो अन्त तक कुछ न कुछ करता ही रहता है, किन्तु फिर भी आक्रमणकारी स्वरूप, धीरे-धीरे कम पड़ता गया।इस प्रकार लल की भजन की गाड़ी चल निकली। फिर उसे भगवान की कृपा से गुरु यथा-समय मिलते रहे, शक्तिपात् भी हुआ, सिद्धियाँ भी प्रकट हुई। इसमें उसके कई जन्म गए। किन्तु साधक को इन सिद्धियों की प्राप्ति से संतोष नहीं होता। इसे साधन मार्ग का एक पड़ाव समझता है। उसे अभी आगे जाना होता है, बहुत आगे ।

भौतिक दृश्य-जगत् से बहुत दूर, जहाँ उसके सिवाय दूसरा हो ही नहीं। जिसे सिद्धियों से संतोष हो जाय समझो कि वह परमार्थ-पथ पर आरूढ़ साधक है ही नहीं। कई जन्मों की कठिन एवं निरन्तर साधन के पश्चात् ही, वह लल के रूप में काश्मीर घाटी में प्रकट हुई।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

''आवश्यक है कि अच्छी हो या बुरी, स्वयं परिपाटी ही बदली जाये, क्योंकि अच्छे के साथ अनिवार्य रूप से बुरा जुड़ा हुआ है। सब चमत्कार केवल हमारी दीनता का उलटा अथवा कहना चाहिए सीधा पहलू भर है। पर जरूरत हमें एक सुधरे-सँवरे संसार की नहीं, नये संसार की है। एक 'उच्च प्रकार का समाहित वातावरण हमें नहीं चाहिए; बल्कि यदि असंगत न रहे तो हम कह सकते हैं कि निम्न प्रकार के समाहित वातावरण की जरूरत है, यहाँ सभी कुछ पुण्यधाम हो जाना चाहिए।''

'देवगण दारा संरक्षित प्रयास वृथा नहीं जाता। आओ, इन सब प्रतिद्वन्द्वी शक्तियों को भी हम अनुभव करें, सचमुच हम यहीं विजय करें। शतमुख की इस लड़ाई में, इस होड़ में हम भी भाग लें।' (१.१७९) और वस्तुतः वह अनेक फणों वाले नाग की ही तरह है। प्रतिदिन रात को सोते हुए, अथवा खुली आँखों ही साधक को बड़े विचित्र लोक दिखाई देते हैं। एक-एक कर वह उन सब ठिकानों का पता लगा लेता है, जहाँ मनुष्यों की सारी कुटिलताओं का उद्‌व है, जहाँ से सारे मानवीय संग्राम और नजरबंदी-शिविर जन्म लेते हैं- 'यहाँ' का सब 'वहाँ' तैयार होता है। वह उन सारी नीच शक्तियों को उनके बिल में जा धरता है जो कुत्सित और क्रूर मनुष्यों को प्रेरित किया करती हैं :

वह एक अकेला अन्वेषक उन भीषण लोकों में वल्मीक सदृश जो रहें सूर्य से सुरक्षित और जितना अधिक प्रकाश किसी को प्राप्त होता है उतने ही अंधकार का उसे पता लगता है। हर रोज रात को खोजते-खोजते वह सड़ाव उसके सामने प्रकट हो जाता है जो छिपे-छिपे जीवन को नष्ट करता रहता है। जब तक ये गले-सड़े

www.the-comforter.org

हिस्से इसी तरह बने रहेंगे, तब तक किसी भी चीज का रूपांतर किस प्रकार हो ? और हमारे मानस और प्राण चूँकि अब सत्य में इतने अधिक प्रतिष्ठित हो चुके हैं, इतने विशद हो चुके हैं कि इन अधोभौतिक शक्तियों के लिए उन पर हमला करना संभव नहीं रहा, तो शरीर पर कष्ट पड़ता है, क्योंकि यही असत्य का आख़िरी अड्डा है।

अब हम खूब अच्छी तरह देखते हैं कि किनके सहयोग से व्याधियाँ अथवा मृत्यु शरीर में प्रवेश पाती हैं-वहाँ की प्रत्येक पराजय यहाँ की पराजय होती है - और स्पष्ट, सविस्तार, मूर्तरूप में उन लोगों की भारी भूल अब समझ में आती है जो बाह्य साधनों और नयी संस्थाओं द्वारा संसार की स्थिति सुधारने में विश्वास रखते हैं ।इधर बुराई अभी मुश्किल से दूर कर पाये, उधर उसकी जड़ें काटी, कि वह कहीं और, रूपांतरण दूसरी जगहों पर, दूसरे रूप में पुनरुज्जीवित हो जाती हैं।बुराई बाहर नहीं, अंदर है, नीचे है, और जब तक इस महारोग का इलाज नहीं हो लेगा, तब तक दुनिया ठीक नहीं हो सकती ।श्री अरविन्द ने ठीक कहा है ... पुराने देवता नयी देह धारना जानते हैं ।

बिल्कुल नीचे तल में सारी अव्यवस्थाओं से परे, भय से परे, उस मूर्त विराट भय से भी परे जिसका कि नीचे आधिपत्य है, हमें एक असीम थकावट मिलती है, एक ऐसी चीज़ जो अस्वीकार करती है, जो जीने के इस सारे दर्द से इंकार करती है, प्रकाश के इस बलापहरण को मना करती है। मनुष्य को लगता है कि यदि वहाँ, उस ना की अंतिम गहराई में उतरे तो प्रस्तर की महाविश्रान्ति में लीन हो जाये जैसे कि ऊपर समाधि की अचेतावस्था प्रकाश की महाविश्रांति थी। मरण

www.the-comforter.org

जीवन का प्रतीप नहीं है, वह भास्वर अतिचेतन का पृष्ठभाग है, उसका प्रवेशद्वार है। इस ना के अन्त में हाँ ही हाँ है जो आनंद को खोजने हेतु हमें एक के बाद एक देह के अन्दर बारबार धकेले जाती है।

मरण केवल इस हाँ का खेद है। नीचे तली की असीम थकावट इस परम आनन्द की प्रतिच्छाया है ।मरण जीवन का प्रतीप नहीं है ! वह देह की तमावृत विश्रांति है क्योंकि उसे अभी अक्षय आनन्द की ज्योतिपूर्ण विश्रान्ति अधिगत नहीं हुई। जब देह इस परम आनन्द को प्राप्त कर लेगी, ऊपर की ही तरह अपने मास के अन्दर छिपी प्रकाश और आनन्द की इस असीमता को पा लेगी, तब उसे मरने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

इस सब के अंदर 'मैं' और 'मुझे' कहाँ है? किधर है 'मेरी' कठिनाई, 'मेरी' मृत्यु, 'मेरा' रूपांतर? साधक ने वैयक्तिक अवचेतन की पतली पपड़ी को फोड़ दिया और अब वह संसार में सर्वत्र फैल गया। सारा संसार विरोध कर रहा है : लड़ाई हम नहीं कर रहे, हरेक चीज़ हमारे विरुद्ध लड़ रही है। हम समझते हैं कि हम सब अलग अलग हैं। हरेक अपने साफ़-सुथरे, छोटे-से चमड़ी के थैले में बंद है और उसका एक 'अन्दर' है एक 'बाहर', और हमारे देशों की उपहासास्पद तुच्छ सीमाओं की तरह ही एक व्यष्टि है एक समष्टि, किन्तु सब एक दूसरे के साथ जुड़ा हुआ है।

इस दुनिया की कोई विकृति, कोई कलंक ऐसा नहीं जिसकी एकाध जड़ हमारे अन्दर न हो ; एक भी मौत ऐसी नहीं होती जिसमें हमारा हाथ न हो। हम सब दोषी हैं और सभी शामिल हैं। यदि सबका उद्धार नहीं हो तो किसी का भी उद्धार नहीं होता। श्री माँ का कहना है कि यह एक देह की नहीं

www.the-comforter.org

बल्कि देहमात्र की समस्या है।

श्री अरविन्द और श्री माँ ने इस तरह अनुभूति के आधार पर, भौतिक रूप से संसार की सारभूत एकता को स्पष्ट कर दिखाया। हम एक बिंदू को स्पर्श करें और अन्य सब अछूते रह जायें, यह असंभव है। मनुष्य एक पग आगे या ऊपर की ओर नहीं उठा सकता, यदि बाकी सारा संसार भी एक पग ऊपर या आगे की ओर न बढ़ाये। अभी हम ऊपर 'नीति' की कठिनाई की बात कर रहे थे। बिल्कुल संभव है कि दिव्य नीति को यह अभीष्ट न हो कि अन्य सब बिंदुओं के बिना एक बिंदु एकाकी ही प्रगति किये जाये।

यही कारण है कि छह हज़ार वर्ष पूर्व वैदिक ऋणिगण को सफलता नहीं मिली। व्यक्ति का पूर्ण और स्थायी रूपांतर संभव नहीं जब तक कि सारे संसार का किसी न्यूनतम मात्रा में रूपांतर न हो। ... इस प्रकार रूपांतर कार्य का द्वितीय काल समाप्त हुआ। सन् १९२६ से सन् १९४० तक चौदह वर्ष अपने चुने मुट्ठी भर शिष्यों के साथ वैयक्तिक और एकाग्र रूप से कार्य करने के पश्चात, श्री अरविन्द और श्री माँ ने देखा कि सामने एक दीवार खड़ी है।

ज्योंही अतिमानसिक प्रकाश जड़तत्त्व में अंतर्वलित समरूप प्रकाश के साथ मिल जाने के लिए पृथ्वी के समीप आने लगता था, त्योंही सामूहिक अवचेतन से गंद की धाराएँ फूट पड़ती थीं और फिर से सब आवृत हो जाता था।

श्री अरविन्द का कहना है: मानव-जाति का उद्धार करने के लिए यह पर्याप्त नहीं कि कोई एक मनुष्य, चाहे वह कितना भी महान क्यों न हो, वैयक्तिक रूप से समस्या को पूरी तरह हल कर डाले, क्योंकि दिव्य

www.the-comforter.org

प्रकाश नीचे आने के लिए तैयार होता भी है तो यहाँ तब तक नहीं टिक सकता जब तक कि निम्न स्तर उस महान् अवतरण के दबाव को सहन करने के लिए तैयार न हो जाये । यह बात मतलब रखती है (शायद हम जितना सोचते हैं उससे अधिक) कि रूपांतर-कार्य के द्वितीय काल का अंत तभी हुआ था जब द्वितीय विश्व युद्ध का आरंभ हुआ। जब ऊर्ध्व प्रकाश का भार मनुष्यों के बीच किसी एक देह के अन्दर उतरता है तो संसार की देह भी उत्तप्त होने लगती है। वस्तुतः संसार के भले-बुरे के बारे में हम जानते ही क्या हैं ?

इन सामूहिक अवरोधों के सामने श्री अरविन्द और श्री माँ कुछ देर के लिए असमंजस में पड़ गये। वे विचारने लगे कि क्या यह संभव नहीं कि वे अपने आपको बाकी संसार से पृथक कर अपने कुछ शिष्यों सहित सीधे अकेले ही आगे बढ़ते जाये और रूपांतर सम्पन्न करके फिर सामूहिक कार्य के लिए वापिस लौटें ताकि उनके अपने अन्दर पूर्णतः अथवा अंशतः ही साधित रूपांतर शेष पृथ्वी पर आप ही धीरे धीरे फैलता जाये (यही चीज़ थी जिसने असंख्य आत्मज्ञानियों, गुह्यविदा, मध्यकालीन आदर्श सूरमाओं अथवा अन्य मण्डलों को अपने लिए दुनिया से अलग एक गुप्त स्थान चुनने के लिए प्रेरित किया ताकि वे सामूहिक स्पंदों की गंदगी से बचे रह कर अपना कार्य कर सकें)।

किन्तु श्री अरविन्द और श्री माँ ने देखा कि यह भ्रम है और पीछे से नवीन उपलब्धि और पुरानी धरती के बीच का गर्त या श्री अरविन्द ने जैसे कहा है, वायुमण्डलीय खाई इतनी अधिक विराट होगी कि फिर कभी उस पर सेतु न बाँधा जा सकेगा। और

www.the-comforter.org

व्यक्तिगत सफलता से लाभ ही क्या यदि वह बाकी संसार में संक्रमण न कर सके? हम ऐण्डरसन के उस राजा की ही तरह होंगे जिसकी हम पहले बात कर रहे थे।

यदि एक अतिमानसिक जीव का सहसा धरती पर आविर्भाव हो जाये तो कोई भी उसे देख न पाये। पहले हमारी आँखें एक दूसरी तरह के जीवन के प्रति खुलनी आवश्यक हैं। श्री माँ का कथन है: यदि तुम एक ऐसे मार्ग पर बढ़ते जाओ जो तैयार हो चुका हो (क्योंकि मार्गों का भी वही हिसाब है जो प्राणियों का-कुछ तैयार होते हैं) और शेष सृष्टि की बाट देखने का धैर्य तुम न रखो, अर्थात् यदि तुम कोई ऐसी अनुभूति प्राप्त कर लो जो संसार की वर्तमान स्थिति की अपेक्षा चरम सत्य के कहीं अधिक समीप हो, तो क्या परिणाम हो? अखण्डता जाती रहे और केवल समस्वरता ही नहीं, संतुलन भंग हो जाये, क्योंकि सृष्टि का पूरा एक खण्ड पीछे रह जाये।

और भगवान् की भौतिक अभिव्यक्ति अविकल होने के बदले, क्षुद्र, स्थानिक, अत्यल्प रह जाये। और अन्ततः जो कुछ किया जाना जरूरी है उसका कुछ भी न हो पाये। इसके अतिरिक्त श्री माँ इस बात पर बल देती हैं कि यदि इस कार्य को मनुष्य अकेले करना चाहे तो उसे पूर्ण रूप से करना बिल्कुल असंभव है, क्योंकि हर पार्थिव जीव, चाहे वह कितना भी संपूर्ण क्यों न हो, चाहे वह अत्यधिक उच्च कोटि का हो और बहुत ही विशेष कार्य के लिए उसे विधाता ने रचा हो, फिर भी वह सदा अपूर्ण और सीमित होता है। वह संसार में सत्य का केवल एक पहलू, एक विधान प्रस्तुत करता है।

क्रमशः अगले अंक में...

'दासोऽहम' का 'दा' नष्ट होना ही जीवन का उद्देश्य।

मनुष्य माया के प्रभाव के कारण इस समय अपने स्वरूप को पूर्णरूप से भूल चुका है। माया ने मनुष्य को काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष आदि वृतियों के चक्कर में फंसाकर जितना असहाय इस समय बनाया हुआ है, उतना पहले कभी देखने में नहीं आया।

प्रकृति के उत्थान-पतन के अटल सिद्धांत के कारण हमारे देश की आध्यात्मिक दृष्टि से जितनी गिरावट हमें आज देखने को मिल रही है, वैसी कभी नहीं देखी गई। हम गिरावट के आखिरी बिन्दु को छू चुके हैं। अब इससे नीचे जाने को जगह ही नहीं बची है। सालों की पराधीनता ने हमारे दार्शनिक विचारों की दिशा ही बदल

दी है।

महर्षि श्री अरविन्द के अनुसार 'इस समय अन्धकार भारत में ठोस बनकर जम चुका है। उन्ही के शब्दों में –'यह कई कारणों से है। हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के आने से पहले ही तामसिक प्रवृतियों और छिन्न-भिन्न करने वाली शक्तियों का जोर हो चला था। उनके आने पर मानो सारा तमस ठोस बनकर जम गया है। कुछ वास्तविक काम होने से पहले यह जरूरी है कि यहाँ जागृति आये। तिलक, दास, विवेकानन्द - इनमें से कोई भी साधारण आदमी न था, लेकिन इनके होते हुए भी तमस् बना हुआ है।' इस सम्बन्ध में 'श्रीमाँ' ने भी कहा था–'भारत के अन्दर सारे संसार की समस्याएँ केन्द्रित हो गई हैं, और उनके हल होने पर सारे संसार का भार हल्का हो जायेगा।' महर्षि ने एक जगह लिखा है कि हमने चिन्तन करने का तरीका भी पश्चिम से उधार ले रखा है। ऐसी दयनीय दासवृति के रहते हम हमारे दर्शन की सही स्थिति विश्व के सामने प्रस्तुत कर ही नहीं सकते।

पश्चिम के तथाकथित दार्शनिक कहे जाने वाले लोग, हमारे दर्शन की मनमाने ढंग से व्याख्या करके खिल्ली उड़ा रहे हैं और हम, असलियत प्रमाणित करने का कभी विचार ही नहीं करते। इसके विपरीत पूर्णसत्य की अनदेखी करके, उन लोगों के प्रयास के प्रति अपनी सहमति प्रदान करते हैं। इस प्रकार की दासवृति का उदाहरण विश्व में ढूंढने पर भी मिलना कठिन है।

मुझे हमारी दासवृति का चिन्तन करते समय, मेरे एक आध्यात्मिक मित्र द्वारा कही हुई बात याद आ गई। प्रसंगवश मैं उसका विवरण देना ठीक

समझता हूँ, क्योंकि हमारे आध्यात्मिक जगत् में इस समय उसी वृति का सबसे अधिक प्रभाव है। मेरे मित्र ने जिस उदाहरण से उपदेश देकर समझाने का प्रयास किया वह इस प्रकार है –एक व्यक्ति ने मंत्र दीक्षा में किसी संन्यासी से 'सो हम' शब्द की दीक्षा प्राप्त की, और वह उसका जप करने लगा। थोड़े दिनों बाद एक दूसरा संन्यासी उसके घर आया और उससे पूछा, 'बेटा, ईश्वर का नाम जप करते हो क्या?' उसने कहा 'महाराज ! मुझे एक संत ने 'सोऽहम' का जप करने का आदेश दिया था, सो उसी को जप रहा हूँ। संन्यासी बोले, 'बेटे ! यह मंत्र तो पूर्ण नहीं है। इसके आगे एक 'दा' लगाकर जप करो।' उसने 'दासोऽहम' का जप प्रारम्भ कर दिया। कुछ दिनों में पहला संन्यासी पुनः आया और पूछा 'क्या वह मंत्र जप कर रहा है?'

उसने कहा, 'महाराज ! एक संन्यासी ने मुझे बताया कि मैं जिस मंत्र का जप कर रहा हूँ वह पूर्ण नहीं है। अतः उनके आदेश के अनुसार 'दा' आगे लगाकर 'दासोऽहम' का जप कर रहा हूँ।' सन्यासी बोले, 'यह ठीक नहीं हुआ। खैर इसके आगे एक 'स' और लगाकर जपो।' अतः 'वह व्यक्ति 'सदासोऽहम' का जप करने लगा। फिर जब दूसरे संन्यासी ने पुनः आकर जप के बारे में जानकारी ली तो उसने कहा, 'महाराज ! प्रथम दीक्षा देने वाले बाबा जी ने कहा कि इससे मुझे मुक्ति संभव नहीं। अतः उनके आदेशानुसार एक 'स' और लगाकर 'सदासो हम' का जप कर रहा हूँ'।

संन्यासी ने कहा 'बेटा ! तुम फिर भ्रम में फंस गये। खैर कोई बात नहीं इसके आगे एक 'दा' और लगा लो।' अतः वह उस दूसरे संत के

आदेशानुसार एक 'दा' और लगाकर 'दासदासोऽहम' का जप करने लगा। इस प्रकार आज हमारे देश में दासों के भी दास बनने की वृति का प्रभाव चल रहा है। ऐसी स्थिति में हम यह कल्पना करें कि हम २१वीं सदी में पुनः हमारे स्वर्ण- यग में प्रवेश कर जायेंगे, तो यह मात्र मृगमरिचिका ही होगी। हमें दासवृति का उन्मूलन राष्ट्रीय स्तर पर करना ही होगा, तभी सफलता संभव है। कैसी विडम्बना है, अवतारवाद का जनक सनातन धर्म, पैगम्बरवाद के सामने बौना नजर आ रहा है। पैगम्बरवादी दर्शन ही 'दासदासोऽहम' की वृति का दर्शन है। कैसी उल्टी गंगा बह रही है !

यह हमारी गिरावट की पराकाष्ठा है और नीचे जाने को अब जगह ही नहीं है। कालचक्र अबाध गति से चलता है, प्रकृति के इस अटल सिद्धान्त के अनुसार हमारा उर्ध्व-गमन प्रारम्भ हो चुका है। प्रकृति के अटल सिद्धांत के अनुसार संसार की कोई भी शक्ति प्रगति के शिखर तक पहँचने में हमारे रास्ते में कोई बाधा नहीं खड़ी कर सकती। हमारे सनातन-धर्म के उज्ज्वल भविष्य के बारे में हमारे अनेक संत भविष्यवाणियाँ कर गये हैं परन्तु सालों की दासता ने हमारा स्वाभिमान पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया है।

हमें हमारे किसी भी महान् संत की भविष्यवाणी पर विश्वास नहीं हो रहा है। इसके विपरीत पश्चिम का एक साधारण व्यक्ति कुछ भी कह दे, हम आँख बन्द करके उसे स्वीकार कर लेते हैं इसीलिए मुझे विवश होकर पश्चिम के चन्द भविष्य- दृष्टाओं की भविष्यवाणियों का विवरण लिखना पड़ रहा है। हमारे अनेक संतों ने इनसे

कहीं अधिक स्पष्ट चित्र हमारे भविष्य का खींचा है। हमारी मजबूरी देखिये कि मैं उनका वर्णन इसलिए नहीं कर पा रहा हूँ क्योंकि हमारी मानसिकता उन्हें सत्य मानने की है ही नहीं। विश्वभर के भविष्यद्रष्टाओं ने एक स्वर से भविष्यवाणी की है कि 20 वीं सदी के अन्त से पहले भारत धर्म और कर्म के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व करेगा। चंद भविष्यदृष्टाओं ने भारत के बारे में जो भविष्यवाणियाँ की हैं।

इसी संदर्भ में महर्षि श्री अरविन्द ने जो भविष्यवाणी की हैं वह सभी भविष्यवाणियों से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। श्री अरविन्द की भविष्यवाणी गीता के निम्नलिखित श्लोकों पर आधारित है–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।(४.७)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ।।(४.८)

हे भारत, जब जब धर्म की हानि (और) अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब ही मैं अपने स्वरूप को रचता हूँ अर्थात् प्रकट करता हूँ। साधु पुरूषों का उद्धार करने के लिए और दूषित-कर्म करने वालों का नाश करने के लिए (तथा) धर्म-स्थापन करने के लिए, युग-युग में प्रकट होता हूँ।

महर्षि श्री अरविन्द ने इसी संदर्भ में कहा है–'24 नवम्बर 1926 को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं है। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण जो जगत को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्रीकृष्ण

आनन्दमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्बुद्ध करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।' श्री अरविन्द के अनुसार मानवरूप में अवतरित वह परमसत्य अपने त्वरित क्रमिक विकास के साथ 1993 के अन्त तक सम्पूर्ण - विश्व के सामने प्रकट हो जावेगा।

इस समय विश्व में 'दासदासोऽहम' की वृत्तियों का एक छत्र साम्राज्य है। पैगम्बर प्रभु के दास और उसके अनुयाई पैगम्बर के दास। सोऽहम् के सिद्धांत का जन्म दाता तो एक मात्र सनातन धर्म ही है। कैसी उल्टी गंगा बह रही है ! विश्व भर में आध्यात्मिक ज्ञान अपनी गिरावट की पराकाष्ठा तक पहुँच गया है। अब नीचे जाने को जगह ही नहीं बची है। अतः अब अन्धकार के खत्म होने का क्रम प्रारंभ ही नहीं हुआ है बल्कि उसका उषाकाल है। सूर्य भगवान् अर्थात् सविता देव उदय होने ही वाले हैं। जिसका वर्णन वेदों के सर्वोत्तम गायत्री मंत्र में किया गया है अर्थात् दिव्य ज्ञान का प्रकाश। अतः अब हमें 'दासदासोऽहम्' की वृति के स्थान पर अपनी मूलभूत नाथवृत्ति का दिव्य प्रकाश विश्व में फैलाना ही होगा। इसके बिना विश्व-शांति मात्र एक कल्पना का ही विषय रहेगा।

आज हम जिस दास-वृति के सहारे जीवन बिता रहे हैं, विश्व उसे स्वीकार कभी नहीं करेगा। हमें अपने असली स्वरूप को पहचानना ही पड़ेगा। यह समय की माँग है अर्थात प्रभु की पूर्व निश्चित व्यवस्था है। अब हमारे उत्थान को विश्व की कोई भी शक्ति प्रभावित नहीं कर सकेगी।

२०वीं सदी के इस आखिरी दशक में, विश्व में जो परिवर्तन का तूफान

आया है उससे कई संस्कृतियों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा। विभिन्न जातियों और धर्मों पर विश्व में जो नया संकीर्ण ध्रुवीकरण हो रहा है, वहीं विश्व के महाविनाश का कारण बन सकता है।

इस दिव्य ज्ञान के सम्बन्ध में महर्षि श्री अरविन्द ने स्पष्ट शब्दों में भविष्यवाणी की है – 'हमारे ऋषियों ने जिस दिव्य ज्ञान को प्राप्त किया था, वह पुनः लौटकर आ रहा है, हमें इस प्रसाद को सम्पूर्ण विश्व को बांटना है।' संसार में शांति स्थापित करने के सभी प्रयास असफल हो चुके हैं।

अतः सम्पूर्ण विश्व की आँखे भारत की ओर निहार रही हैं क्योंकि उनका अमोघ माना जाने वाला 'धनबल' और 'जनबल', शांति के प्रयासों में पूर्ण रूप से असफल हो चुका है। अब तीसरे बल अर्थात्

'मनबल' का ही परीक्षण बाकी बचा है और भारत अनादिकाल से अपने मनबल रूपी अमोघ अस्त्र से विजय प्राप्त करता आ रहा है।

भारत सम्पूर्ण मानव-समाज की असाध्य बीमारी का इलाज करेगा, उसका वर्णन करते हुए महर्षि श्री अरविन्द ने कहा है –'क्रम-विकास में अगला कदम जो मनुष्य को एक उच्चतर और विशालतर चेतना में उठा ले जायेगा और उन समस्याओं को हल करना प्रारंभ कर देगा, जिन

समस्याओं ने मनुष्य को तभी से हैरान और परेशान कर रखा है, जब से उसने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाज के विषय में सोचना- विचारना शुरू किया था। यह अभी तक एक व्यक्तिगत आशा, विचार और आदर्श मात्र है, जिसने भारत और पश्चिम में दोनों जगह दूरदर्शी विचारकों को वश में करना शुरू कर दिया है। इस मार्ग की कठिनाइयाँ प्रयास के किसी भी अन्य क्षेत्र की अपेक्षा बहुत अधिक जबरदस्त है, परन्तु कठिनाइयाँ जीती जाने के लिए ही बनी थी, और यदि दिव्य परम-इच्छा शक्ति का अस्तित्व है तो वे दूर होगी ही। यहाँ भी, यदि इस विकास को होना है तो चूंकि यह आत्मा और आन्तरिक चेतना की अभिवृद्धि द्वारा ही होगी, इसका प्रारंभ भारत ही कर सकता है, और यद्यपि इसका क्षेत्र सार्वभौम होगा, तथापि केन्द्रीय आंदोलन भारत ही करेगा।'

यह कार्य कितना कठिन है, उसका वर्णन महर्षि ने ऊपर बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है। अगर आम भारतीय के दिल में नाथवृत्ति जाग्रत हो जाय तो कार्य सम्पूर्ण सफलता के साथ अवश्य पूर्ण होगा। सालों की पराधीनता ने हमें भारी आघात पहुँचाया है। आजादी के बाद भी देश की जो स्थिति है, उससे आम भारतीय की निराशा कुछ बढ़ी ही है कम नहीं हुई, परन्तु यह अवतारों की धरती है।

प्रकृति के उत्थान-पतन के सिद्धांत के कारण आज हम कमजोर जरूर दिख रहे हैं, परन्तु २१वीं सदी के प्रारंभ के पहले ही हम हमारे स्वर्णयुग की सीमा में पुनः प्रवेश कर जावेंगे।।

इस संबंध में महर्षि श्री अरविन्द की निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं:

'भगवान की इच्छा है कि भारत सचमुच भारत बने, युरोप की कार्बन कॉपी नहीं। तुम अपने अन्दर समस्त शक्ति के स्त्रोत को खोज निकालो, फिर तुम्हारी समस्त क्षेत्रों में विजय-ही-विजय होगी। तुम्हें दूसरे देशों और राष्ट्रों की तरह प्रगति करने की जरूरत नहीं है। तुम्हें उनकी तरह दूसरों को दबाने और कुचलने की जरूरत नहीं। तुम्हें उठना है ताकि तुम दुनिया को उठा सको। वह ज्ञान जिसे ऋषियों ने पाया था, फिर से लौटकर आ रहा है, उसे हमें सारे संसार को देना है।'

आजादी प्राप्त करने के बाद श्री अरविन्द ने कहा था 'हम केवल सरकार का रूप बदलने के लिए तैयारी नहीं कर रहे हैं, हम एक राष्ट्र को गढ़ना चाहते हैं। राजनीति तो इसका एक छोटा सा भाग है। हम केवल राजनीति, सामाजिक संगठन, धार्मिक वाद-विवाद, दर्शन साहित्य या विज्ञान तक ही अपने आपको सीमित नहीं रखना चाहते। हमारे लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है 'धर्म' और ये सब चीजें और इसके अतिरिक्त और बहुत कुछ हमारे धर्म की परिभाषा में आते हैं।

जीवन के कुछ महान नियम है, मानव-विकास का एक सिद्धांत है और अध्यात्म-विद्या का एक भंडार है। ये सब तत्त्व हमारे 'सनातन धर्म' के अन्दर आ जाते हैं। इसकी रक्षा करना, इसका प्रसार करना और इसका मूर्तिमन्त उदाहरण बनना भारत का कर्तव्य है। विदेशी प्रभाव के कारण भारत अपने धर्म को खो बैठा है। सनातन धर्म- सिद्धांतों का, धार्मिक परिपाटियों का एक समूह नहीं है। जब तक उसे जीवन में न उतारा

जाय, हमारे दैनिक जीवन की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीज के अन्दर-चाहे वह राजनीति हो या वाणिज्य, साहित्य हो या विज्ञान, वैयक्तिक आचरण हो या राष्ट्रीय कूटनीति-मूर्तरूप से न लाया जाय, तब तक उसकी सफलता नहीं होगी। ''भारत, जीवन के सामने 'योग' का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसक रक्षण करेगा।''

योग के द्वारा सच्ची-स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करने की बात हमें तब तक समझ में नहीं आ सकती। जब तक हम क्रियात्मक ढंग से उसका वास्तविक आनन्द ले नहीं लेते। भारतीय योगदर्शन उस परमतत्त्व से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने का क्रियात्मक पथ बताता है। उस परमसत्ता में ही मात्र ज्ञान और विज्ञान की पराकाष्ठा है। अभी उसके पास असीम ज्ञान और विज्ञान विश्व में प्रकट करने को पड़ा है। श्री चार्ल्स क्लार्क का यह कथन कि भारत विज्ञान की उन्नति में सब देशों को पछाड़ देगा। हंगरी की महिला भविष्यवक्ता बोरिस्का का यह कथन कि वह भारत का अलौकिक आध्यात्मिक व्यक्ति भौतिकवाद को अध्यात्मवाद में बदल देगा। नार्वे के बी. आनन्दाचार्य की यह भविष्यवाणी कि सम्पूर्ण विश्व को भारत का विज्ञान ही मान्य होगा। उक्त भविष्यवाणियाँ किसी हिन्दू संत की नहीं है कि उस पर अपने ज्ञान की बड़ाई करने का दोष लग सके। सभी भविष्यवक्ता गैर हिन्दू हैं।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

गतांक से आगे...
कठिनाई में...

योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

मैंने यह देखा है कि अहंकार (गर्व, दंभ, दराकांक्षा) अन्य राजसिक लालसाओं और वासनाओं की तरह ही एकदम उन्हीं की कोटि का, साधनमार्ग में होने वाले आध्यात्मिक सर्वनाशों का एक प्रधान कारण रहा है। इसे पूरी तरह निकाल बाहर न कर अनासक्ति के द्वारा इसके साथ समझौता करना व्यर्थ होता है; इसे उन्नीत करने की चेष्टा करना, जैसा कि यूरोप के बहुत-से आधुनिक गुप्त विद्याविशारदों का मत है, अत्यंत जल्दबाजी से भरा हुआ और खतरनाक प्रयोग है। क्योंकि जब कामवृत्ति और आध्यात्मिकता को एक साथ मिला-जुला दिया जाता है तभी सबसे बड़ा सर्वनाश उपस्थित होता है। यहाँ तक कि कामवृत्ति को भगवान् की ओर मोड़कर उसे ऊपर उठा ले जाने का प्रयत्न करने में भी, जैसा कि वैष्णवों के मधुर भाव में किया गया है, बड़ा भारी खतरा है-इस बात का निदर्शन बार-बार हमें उन परिणामों से मिलता है जो इस पथ में थोड़ा-सा भी गलत कदम उठाने या कोई अपप्रयोग करने से उत्पन्न होते हैं। जो हो, इस योग में, जो केवल भगवान् की मूल उपलब्धि ही नहीं चाहता, बल्कि समस्त सत्ता और स्वभाव को ही रूपांतरित करना चाहता है, मैंने यह देखा है कि कामशक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त करने को अपना लक्ष्य बनाना साधना के लिये अत्यंत आवश्यक है; अन्यथा प्राणमय चेतना एक गंदली, मिली-जुली चीज ही रह जायेगी, और यह गंदलापन अध्यात्म भावापन्न

www.the-comforter.org

मन की शुद्धता को क्षुण्ण करेगा और शरीर की शक्तियों की ऊर्ध्वमुखी गति में भयानक बाधा उपस्थित करेगा। इस योग की यह माँग है कि समस्त निम्नतर या साधारण चेतना का पूर्ण ऊर्ध्वारोहण हो जिससे वह उस अध्यात्म चेतना के साथ युक्त हो जो उसके ऊपर स्थित है, और मन, प्राण और शरीर में, उनका रूपांतर करने के लिये अध्यात्म चेतना का (अंत में अतिमानस का) पूर्ण अवरोहण हो। जब तक काम-वासना मार्ग को बंद किये हुए है तब तक संपूर्ण ऊर्ध्वारोहण असंभव है; जबतक प्राण में कामवासना का प्राबल्य है तब तक अवतरण खतरनाक है। कारण किसी भी क्षण यह काम-वासना, जिसका उच्छेद नहीं किया गया है अथवा जो सुप्त अवस्था में पड़ी है, ऐसा गंदलापन उत्पन्न कर सकती है जो यथार्थ अवतरण को पीछे फेंक देता है और अर्जित शक्ति को अन्य उद्देश्यों के लिये व्यवहृत करता है अथवा चेतना की समस्त क्रिया को मलिन और भ्रम में डालने वाली मिथ्या अनुभूति की ओर मोड़ देता है। अतएव साधक को चाहिये कि वह इस बाधा को अवश्य मार्ग से हटा दे; अन्यथा वह या तो सुरक्षित नहीं रह सकता अथवा सिद्धि की ओर मुक्त गति से नहीं जा सकता।

तुम जिस विपरीत मत की बात कहते हो वह इस धारणा के कारण हो सकता है कि कामवृत्ति मनुष्य की प्राण-शरीरमयी समस्त सत्ता का एक स्वाभाविक अंग है, आहार और निद्रा की तरह ही एक आवश्यक चीज है और इसका पूर्ण निरोध कर देने से प्रकृति की समतोलता नष्ट हो सकती है और भयानक गड़बड़ी उत्पन्न हो

www.the-comforter.org

सकती है। यह ठीक है कि यदि बाह्य क्रिया में कामवृत्ति का दमन किया जाये पर अन्य उपायों से उसे चरितार्थ किया जाये तो उसके फलस्वरूप आधार में उथल-पुथल मच जाती है और अस्वस्थ हो जाता है।

परंतु मैंने देखा है कि ये सब चीजें केवल तभी होती हैं जब कि स्वाभाविक कामोपभोग के स्थान में कोई विकृत ढंग से गुप्त संभोग की क्रिया में लिप्त होता है। अथवा कल्पना के द्वारा एक प्रकार का सूक्ष्म प्राणमय उपभोग करता है या किसी अदृश्य रहस्यपूर्ण प्राणिक आदान-प्रदान के द्वारा कामवृत्ति चरितार्थ करता है, मैं नहीं समझता कि यदि कोई इस कामवृत्ति पर प्रभुत्व स्थापित करने और उससे उपराम होने के लिये सच्चा आध्यात्मिक प्रयास करे तो उससे कभी कोई हानि हो सकती है। आज यूरोप में बहुत-से डॉक्टर यह मानने लगे हैं कि कामोपभोग से अलग रहने से, यदि वह ठीक-ठीक किया जाये तो लाभ ही होता है; क्योंकि रेतस् के अंदर का वह तत्त्व जो कामपोभोग के समय व्यय होता है उस समय अपने उस दूसरे तत्त्व में परिणत हो जाता है जो समस्त आधार की-मन, प्राण और शरीर की शक्तियों का पोषण करता है और यह बात भारत की ब्रह्मचर्य संबंधी भावना का समर्थन करती है जिसमें रेतस् को ओजस् में रूपांतरित किया जाता है और उसकी शक्तियों को ऊपर की ओर उठा ले जाया जाता है जिससे वे एक आध्यात्मिक शक्ति का रूप ग्रहण कर लें।

क्रमशः अगले अंक में...

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्षा की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा

www.the-comforter.org

का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग द्वारा शक्तिपात दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार गुरुदेव इस दिव्य ज्ञान को विश्व भर में निःशुल्क बाँट रहे हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है और ध्यान के समय विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ स्वयं करवाती हैं। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके

www.the-comforter.org

आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है, जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है। सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से यह मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं संजीवनी मंत्र के जाप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022

शीघ्र ही चेतना के ऊर्ध्वलोक से एक भागवत-शक्ति का अवतरण होगा, जो पृथ्वी पर स्थापित 'मृत्यु' और 'असत्य' के राज्य को समाप्त कर, यहाँ भी 'भगवान्' के राज्य की स्थापना करेगी।

-श्री अरविन्द

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।